फर्डिनेंड मैगलन कौन थे?

फर्डिनेंड मैगलन कौन थे?

सिडेल क्रेमर

चित्र : एलिजाबेथ वुल्फ

विषय-वस्तु

फर्डिनेंड मैगलन कौन थे?
लड़का, आदमी बन जाता है
युद्ध हीरो
नए राजा ने सुना
तैयारी
मुश्किल समुद्र
ठंड से जकड़न
प्रशान्त महासागर
पार करना
आखिरी लड़ाई
यात्रा का अंत
मैगलन की समय-रेखा
विश्व की समय-रेखा

फर्डिनेंड मैगलन कौन थे?

उस समय की कल्पना करें जब कोई यह बात नहीं मानता था कि पृथ्वी गोल है. . . तब लोगों का मानना था कि अगर वे अपने घर से बहुत दूर चले जाएंगे तो वे एक किनार पर पहुँचकर नीचे गिर जाएंगे. उस समय की कल्पना करें जब अधिकांश लोगों को यह पता ही नहीं था कि प्रशांत महासागर जैसा कोई समुद्र था. अगर हम पांच सौ साल पीछे जाएं, जब सभी महाद्वीप अभी भी अनदेखे थे, तब लोगों को लगता था कि पृथ्वी बहुत छोटी थी और वहां समुद्रों में राक्षस तैरते थे. फिर भी एक आदमी ने, अज्ञात समुद्रों में अपने जहाज को चलाने का फैसला किया और पता लगाने की कोशिश की कि आखिर वहां क्या था.

वो इस तरह की खतरनाक यात्रा करने वाला पहला इंसान नहीं था. परन्तु वो बहुत दूर गया और अन्य लोगों के मुकाबले अधिक समय तक दूर रहा. अपने दिमाग और साहस के कारण, वो दुनिया भर का चक्कर लगाने वाला पहला व्यक्ति बना.

वो कौन था?

फर्डिनेंड मैगलन

अध्याय 1

लड़का, आदमी बन जाता है

पुर्तगाल में 1480 के आसपास, फर्डिनेंड नाम के एक लड़के का जन्म मैगलन परिवार में हुआ. मैगेलन एक कुलीन परिवार था, लेकिन उनके पास बहुत कम पैसा या शक्ति थी. उनके पास समुद्र से दूर एक खेत था.

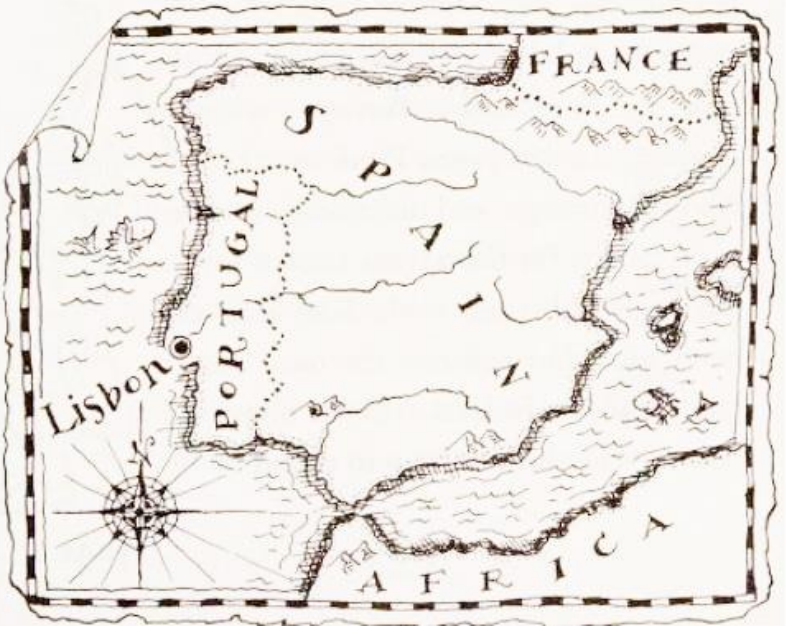

यहीं पर तीन बच्चों में सबसे छोटा फर्डिनेंड बड़ा हुआ. उनका घर फैंसी नहीं था: परिवार सबसे ऊपरी मंजिल पर रहता था और उनकी गाय, बकरियां, भेड़ और मुर्गियां नीचे रहती थीं.

फर्डिनेंड का जीवन, बारह वर्ष का होते ही बदल गया. पुर्तगाल की रानी लियोनोरा को, छोटी उम्र के एक लड़के-नौकर की जरूरत थी. ऐसे लड़के संदेश देते और शाही परिवार के छोटे-मोटे काम करते थे. फर्डिनेंड को उस नौकरी के लिए चुना गया. लड़के-नौकर सिर्फ काम ही नहीं करते थे. उन्हें एक अच्छी शिक्षा भी मिलती थी और वो देश के सबसे महत्वपूर्ण लोगों से मुलाकात करते थे. कोई चतुर लड़का ऐसी नौकरी पाकर सफलता की सीढ़ी पर चढ़ सकता था.

काली मिर्च

जायफल

फिर फर्डिनेंड घर छोड़कर पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन चला गया. जिस लड़के ने पहले कभी समुद्र नहीं देखा था, उसने खुद को एक तटीय शहर में पाया. वो कितनी सुन्दर जगह थी! लिस्बन के बंदरगाह, सुंदर नौकायन जहाजों से भरे हुए थे, और वहां की गोदी दूर के बंदरगाहों द्वारा लाए माल से भरी थी. वहां सोना था और रेशम था. मसाले थे—काली मिर्च, लौंग, अदरक, जायफल और दालचीनी. मसाले मूल्यवान थे क्योंकि उनका उपयोग बीयर बनाने के लिए किया जाता था. मसाले, मांस और अन्य खाद्य पदार्थों को अधिक स्वादिष्ट बनाते थे. सबसे महत्वपूर्ण, मसाले भोजन को खराब होने से बचाते थे.

मसाले बहुत महंगे होते थे. ऐसा इसलिए था क्योंकि उनमें ज्यादातर मसाले पुर्तगाल से हजारों मील दूर, एशिया से आते थे.

लौंग

दालचीनी

भारत जैसे देशों में मसाले उगते थे और जिन्हें अब हम श्रीलंका और इंडोनेशिया कहते हैं. मोलुकास, या स्पाइस आइलैंड (मसालों वाला द्वीप), इंडोनेशिया का हिस्सा, सबसे अमीर था. लेकिन यूरोप से इन द्वीपों की यात्रा करना कठिन और खतरनाक था.

फर्डिनेंड के दिनों में, इन मसालों को दूर-दराज़ से लाने का एकमात्र तरीका स्पाइस-रूट लेना था. वो ज़मीन और समुद्र दोनों पर जाने वाला एक लंबा रास्ता था, जो एशिया से होकर गुजरता था यहाँ मसाले उगते थे. फिर हिंद महासागर होकर, मध्य पूर्व के माध्यम से और वेनिस शहर तक उन्हें लाना होता था.

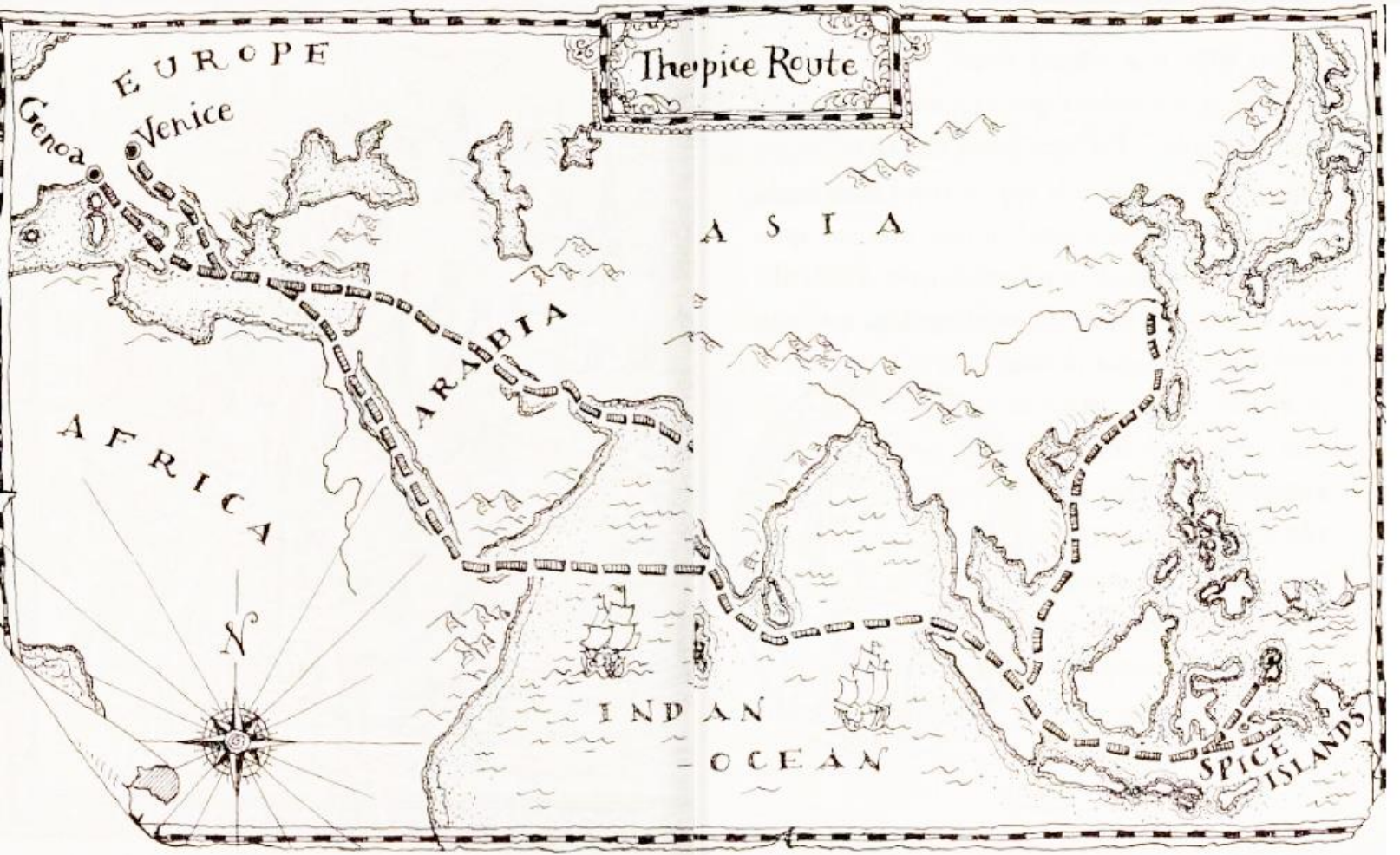

आठ सौ वर्षों तक स्पाइस-रूट पर अरबों का नियंत्रण रहा. उन्होंने वेनिस में अपने व्यापारिक पार्टनर्स के साथ मिलकर कीमती मसालों को ऊंचे दामों पर बेचा.

क्या होगा अगर कोई देश एशिया के लिए एक नया रास्ता खोज निकाले? तब वो खुद मसाले प्राप्त कर सकता था. और वो बहुत मुनाफा भी कमा सकता था. नया मार्ग सिर्फ समुद्री मार्ग ही होना चाहिए था. क्योंकि अरबों की ज़मीन से बचने का यही एकमात्र तरीका था.

पुर्तगाली, मसाले के व्यापार पर अधिकार करना चाहते थे. इसलिए, उन्होंने एक शक्तिशाली नौसेना का निर्माण किया. 1400 के दशक के मध्य से, वे एशिया के लिए एक सीधा समुद्री मार्ग खोजने के लिए अपने जहाज भेज रहे थे.

स्पेन भी उसी मार्ग को खोज रहा था. उसके पास भी एक मजबूत नौसेना थी. 1492 में जैसे ही फर्डिनेंड एक लड़का-नौकर बना, स्पेन के राजा और रानी ने एशिया को खोजने के लिए क्रिस्टोफर कोलंबस को अटलांटिक के पार भेजा. पर एशिया पहुंचे की बजाए कोलंबस, उत्तरी अमेरिका से जा टकराया.

1494 तक, पुर्तगाल और स्पेन के बीच प्रतिस्पर्धा इतनी भयंकर थी कि उनके बीच लगभग युद्ध छिड़ गया था. लेकिन फिर दोनों देश, पूरी दुनिया को दो हिस्सों में बांटने को तैयार हो गए. नक्शे के बीच में एक रेखा खींची गई. स्पेन का, लाइन पर पश्चिम स्थित सभी भूमि पर दावा होगा. पुर्तगाल का पूर्व की सभी भूमि पर दावा होगा. दोनों देश इस बात पर भी सहमत हुए कि वे कभी भी एक-दूसरे के इलाके से होकर नहीं जाएंगे.

शायद उसी समय के आसपास युवा फर्डिनेंड मैगलन ने, एक खोजकर्ता बनने का फैसला किया.

आखिरकार, पुर्तगाल की रानी का महल बंदरगाह के बहुत करीब था और वो वहां सुंदर जहाजों को आते-जाते देख सकता था. महल में महान समुद्री कप्तानों और मसालों से कमाए धन और प्रसिद्धि के बारे में लगातार चर्चा होती रहती थी. माता-पिता की मृत्यु के बाद, फर्डिनेंड को अपने गृहनगर लौटने में कोई रूचि नहीं थी. उसने ईश्वर में अपना विश्वास रखा और माना कि उसका भविष्य समुद्र में ही था.

पुर्तगाल और स्पेन

1494 में पुर्तगाल और स्पेन के बीच युद्ध को किसने रोका? पोप, एलेग्जेंडर VI ने. पोप के पास इतनी शक्ति इसलिए थी क्योंकि पुर्तगाल और स्पेन दोनों कैथोलिक राजाओं द्वारा शासित थे. इसलिए, जब पोप ने उन्हें लड़ाई को निपटाने का एक हल सुझाया, तो दोनों देशों ने उसे माना. उन्होंने स्पेन को दुनिया का एक आधा हिस्सा और दूसरा आधा पुर्तगाल को दिया.

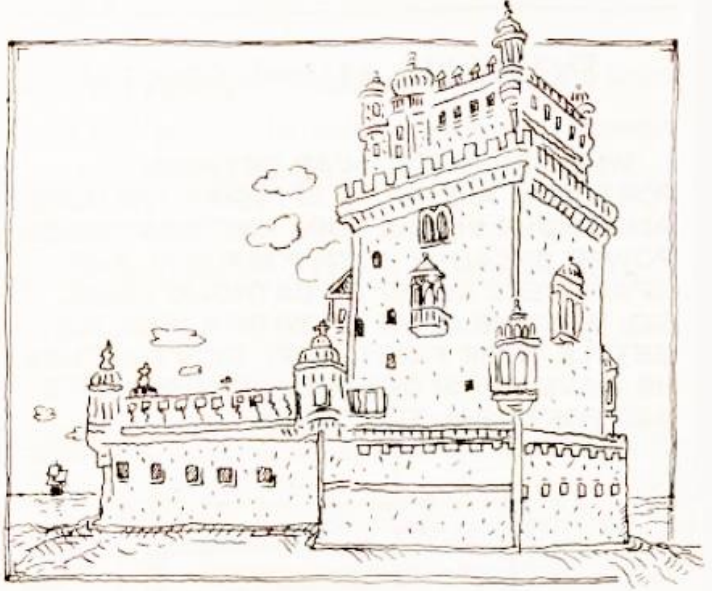

1496 तक, सोलह वर्षीय फर्डिनेंड एक सरकारी क्लर्क था. उसने वास्को डी गामा जैसे महान कप्तानों के लिए एशिया की यात्राओं की तैयारी और इंतज़ाम में मदद की थी. यह वही डी गामा थे, जिन्होंने 1498 में भारत के लिए एक समुद्री मार्ग की महान खोज की थी. उसके बाद से पुर्तगाल को अरब लोगों के साथ व्यापार करने की आवश्यकता नहीं थी. वो खुद मसाले खरीद सकता था. वास्को डी गामा एक राष्ट्रीय हीरो बन गए, और उसके बाद पुर्तगाल ने अफ्रीकी और भारतीय तटों पर अपने किलों और व्यापारिक चौकियों का निर्माण शुरू कर दिया.

क्या फर्डिनेंड भी एशिया की यात्रा कर सकता था? सैकड़ों युवा लड़के, नाविकों के साथ जहाजों में लगातार रवाना हो रहे थे. लेकिन फर्डिनेंड खुद को यात्रा पर ले जाने के लिए किसी को भी नहीं मना पाया. उसने अपना काम बखूबी किया. हालाँकि, वो शक्तिशाली लोगों को नहीं जानता था. स्थिति को बदतर बनाने के लिए, पुर्तगाल के नए राजा, मैनुअल उसे नापसंद करते थे. किसी भी इतिहासकार को उसका कारण नहीं पता था, लेकिन कुछ का अनुमान था कि राजा बहुत घमंडी था और उसे किशोर फर्डिनेंड एक गँवारू लड़का लगता था.

मैनुअल को यह नहीं पता था फर्डिनेंड के पास एक दृढ़ इच्छाशक्ति और एक मजबूत इरादा था. शायद राजा भी उसे रोक नहीं सकता था.

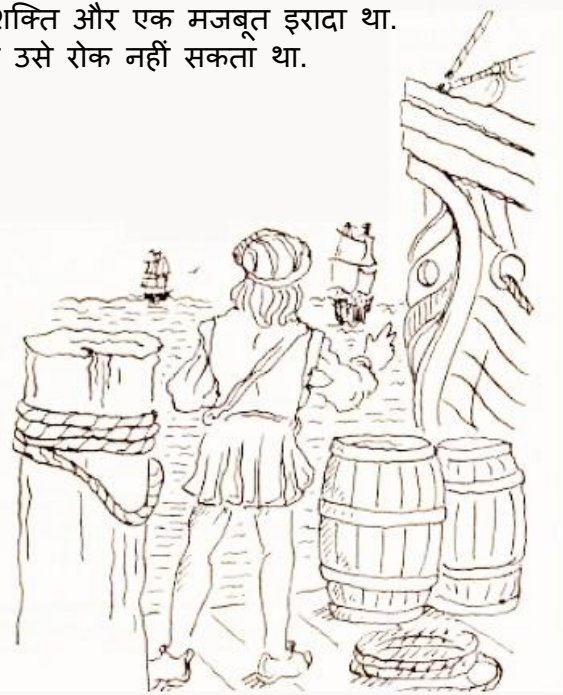

अन्वेषण (एक्सप्लोरेशन) का युग

1416 में पुर्तगाल के एक महान राजकुमार जिनका नाम हेनरी द नेविगेटर (नाविक) था ने नए देशों को खोजने के लिए और दुनिया के बारे में जानने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया. वो चाहते थे कि पुर्तगाल इन नए देशों पर शासन करके दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति बने.

पुर्तगाली खोजकर्ता सबसे पहले अटलांटिक के माध्यम से होकर दक्षिण की ओर रवाना हुए और अफ्रीका के पश्चिमी तट पर पहुंचे. फिर 1488 में, जब फर्डिनेंड मैगेलन अभी भी स्कूल में था, बार्टोलोमू डायस ने अफ्रीका की अंतिम नोक से होकर यात्रा की. उनके लिए अगला कदम एशिया जाना था. अन्वेषण का युग शुरू हो गया था. 1498 में वास्को डी गामा भारत पहुंचा.

अध्याय दो

युद्ध हीरो

पुर्तगालियों को जल्द ही समझ में आया कि अरबी लोग बिना लड़ाई के अपना मसाला व्यापार छोड़ने वाले नहीं थे. 1505 तक, अरबी नौसेना ने पुर्तगाल के जहाजों पर हमला किया. राजा मैनुअल ने पलटवार किया. उसने अपने बेड़े को हिंद महासागर में समुद्री मार्गों पर नियंत्रण करने का आदेश दिया.

पुर्तगाल युद्ध करने जा रहा था. और फर्डिनेंड ने फैसला किया कि वो इसका हिस्सा बनेगा. उसे अपनी जान को जोखिम में डालने के लिए एक पैसा भी नहीं मिलेगा. फिर भी, एक सैनिक की हैसियत से वो दूर जा सकता था. उसका धार्मिक विश्वास मजबूत था, और उसे विश्वास था कि भगवान उसकी रक्षा करेगा. इसके अलावा, अगर भाग्य के उसका साथ दिया तो वो अपने लिए खूब नाम भी कमाएगा.

उसका पहला पड़ाव पूर्वी अफ्रीका था. फिर वो भारत भी आया. वहाँ खूनी युद्ध के मैदान में, फर्डिनेंड ने एक निडर और क्रूर सैनिक बनना सीखा.

हालांकि वो छोटा था, लेकिन वो ताकतवर और तेज-तर्रार था. उसे अपनी प्रवृत्ति पर इतना भरोसा था कि उसे कभी खुद पर काभी शक नहीं किया. वो एक स्वाभाविक नेता था.

1509 तक, फर्डिनेंड लेफ्टिनेंट बन गया था. फिर, भारतीय तट पर एक लड़ाई में, वो इतनी बुरी तरह से घायल हो गया कि वो करीब पांच महीने तक अस्पताल में रहा. उसके ऊपर बीस बोरी गेहूँ का इनाम था. वो बहुत ज्यादा नहीं था, लेकिन फर्डिनेंड को कोई आपत्ति नहीं थी. ठीक होते ही वो वापस समुद्र में चला गया.

उसने दुश्मन द्वारा फंसाए नाविकों को साहसपूर्वक बचाया और चीनी समुद्री लुटेरों को पकड़ लिया. उसकी वीरता के लिए, उसे कप्तान बना दिया गया.

1513 में, फर्डिनेंड वापस लिस्बन लौटा. अपने सैन्य कारनामों के बावजूद, वो उतना ही गरीब था जितना कि, जब वो चला था, और लगभग उतना ही अज्ञात था.

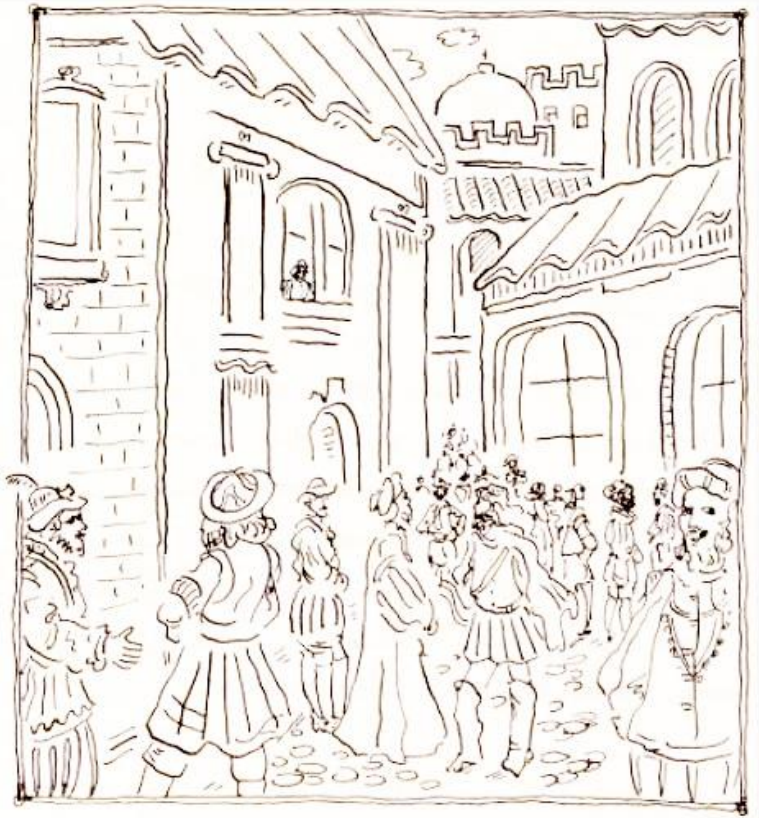

उसने देखा कि शहर व्यापार से फल-फूल रहा था और वहाँ धनी लोगों की भरमार थी. फर्डिनेंड के पास उसके सपने को छोड़कर और कुछ नहीं था.

अब वो तैंतीस साल का था, और वो एशिया जाने वाले एक जहाज पर कप्तान बनना चाहता था. उसे यकीन था कि वो वहाँ पहुँचने का एक तेज़ और छोटा रास्ता खोज सकता था. लेकिन उसे जहाज खरीदने के लिए किसी अमीर व्यक्ति की जरूरत थी. और कोई भी उसके लिए तैयार नहीं था.

फर्डिनेंड उसका कारण समझ नहीं पा रहा था. यहां वो साहस और आत्मविश्वास वाला एक सिद्ध नेता था. उसे समुद्र, हवा और तारों का ज्ञान था. वो एक महान नाविक था. फिर कोई उसे मौका क्यों नहीं दे रहा था?

शायद इसलिए कि लोग अक्सर फर्डिनेंड को नापसंद करते थे. वो कुंवारा था, जो लोगों से अपनी दूरी बनाए रखता था. वो थोड़ा खुरदरा और कर्कश स्वभाव का था जो कभी हंसता नहीं था. छोटा और काला होने के कारण वो लोगों को आकर्षित नहीं कर पाता था. उसे देखकर लोगों को उसमें विश्वास नहीं होता था. जो लोग उसे नहीं जानते थे उन्हें उसकी क़ाबलियत समझ में नहीं आती थी.

उस हालत में कोई कम दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ज़रूर हार मान लेता. लेकिन फर्डिनेंड वैसा नहीं था. वो अपनी योग्यता साबित करने के लिए फिर से युद्ध में लड़ने गया. लेकिन, 1515 में उसका सैनिक करियर समाप्त हो गया. उसका घुटना बुरी तरह से घायल हो गया. अब वो जीवन भर लंगड़ा कर चलेगा.

उसका भविष्य गंभीर दिख रहा था. फर्डिनेंड पैंतीस साल का, लंगड़ा और अलोकप्रिय था. लोग पीठ पीछे उसे चिढ़ाते थे. उसके लिए अब केवल एक ही काम करना बचा था—पुर्तगाल के राजा से भीख माँगना कि वो उसके लिए एक जहाज का इंतज़ाम करे और उसे एशिया जाने दे.

अध्याय 3

नए राजा ने सुना

लिस्बन, अक्टूबर, 1516 को फर्डिनेंड ने पाया कि जिस शहर से वो कभी प्यार करता था अब वहां उसे बहुत अकेला महसूस हो रहा था. कोई भी उसके साथ युद्ध नायक की तरह व्यवहार नहीं करता था. उसके माता-पिता लंबे अर्से पहले ही मर चुके थे, और उसकी कोई पत्नी या बच्चे नहीं थे. अपनी धार्मिक आस्था के अलावा, उसे लगा कि उसके पास और कुछ भी नहीं था. उसका सबसे अच्छा-संभवतः उसका एकमात्र-मित्र उसका गुलाम था.

हताश होकर वो राजा मैनुअल के दरबार में गया. लेकिन जब फर्डिनेंड ने राजा के सामने घुटने टेके, तो मैनुअल ने घोषणा की कि फर्डिनेंड जिस देश में चाहे वहां जा सकता था. "जिसकी चाहो जाकर सेवा करो, लंगड़े," राजा ने कहा.

"तुम्हारे यहाँ पर रहने से हमें कुछ फर्क नहीं पड़ेगा." वो एक भयानक अपमान था. फिर भी, वो बात राजा ने कही थी. परंपरा के अनुसार फर्डिनेंड को जाने से पहले शाही हाथ को चूमना ज़रूरी था. जैसे ही उसने ऐसा करने की कोशिश की, राजा ने अपना हाथ, पीठ के पीछे छिपा लिया. फर्डिनेंड, अपने खराब पैर पर आगे झुकते हुए, अपना संतुलन खो बैठा और लगभग गिर पड़ा.

पुर्तगाल में फर्डिनेंड का करियर समाप्त हो गया था. वो यह बात अब समझ गया. लेकिन अगर उसके देश के राजा ने उसे समुद्र में नहीं भेजा, तो शायद कोई दूसरे देश — स्पेन का राजा, उसे भेजे. पुर्तगाल का दुश्मन स्पेन भी, ज़्यादा-से-ज़्यादा मसाला व्यापार जीतने को उत्सुक था.

स्पेन के एक कप्तान ने एशिया के लिए एक समुद्री मार्ग खोजने की कोशिश की थी पर वो असफल रहा था. यह फर्डिनेंड के घुसने का समय था.

फर्डिनेंड का मानना था कि वो एशिया के "हीरे" - मोलुकास तक पहुँचने का एक नया रास्ता जानता था. वो अटलांटिक के पार दक्षिण-पश्चिम होकर अमेरिका की नई दुनिया के लिए रवाना होगा. वो दुनिया के केवल स्पेन के नियंत्रण वाले आधे हिस्से में यात्रा करेगा, न कि पुर्तगाल नियंत्रित पथ पर. परेशानी यह थी कि बहुत कम लोग ही मानते थे कि जहाज पश्चिम में मोलुकास तक जा सकते थे. लेकिन फर्डिनेंड का उसमें विश्वास था.

वो जानता था कि 1513 में स्पेनिश खोजकर्ता बाल्बोआ दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट की एक चट्टान पर खड़ा था. वहाँ से बाल्बोआ ने एक विशाल महासागर की झलक देखी थी जिसे उसने दक्षिण-सागर का नाम दिया था. (हम इसे प्रशांत महासागर के रूप में जानते हैं.) इसके अलावा, एक जलडमरूमध्य की अफवाहें थीं - जो पानी का एक पतली धार होती है जिसे स्पेनिश एल-पासो कहते थे. एक मत के अनुसार एल-पासो, दक्षिण अमेरिका के तल से होकर अटलांटिक को इस दक्षिण सागर से जोड़ने वाला जलडमरूमध्य था. उनके द्वारा छोड़े गए नक्शों और चार्टों के आधार पर, साथ ही उन्हें बताई गई कहानियों के आधार पर, फर्डिनेंड का मानना था कि मोलुकास उस स्थान के पास था जहाँ एल-पासो, समुद्र में बहता था.

बाल्बोआ

जलडमरूमध्य को अभी तक किसी अन्वेषक ने नहीं खोजा था. जो कोई भी स्पेन के लिए मोलुकास को खोजेगा, उसी व्यापार मार्ग पर बाद में अन्य स्पेनिश जहाज यात्रा करेंगे. वो व्यक्ति इतना अमीर हो जाएगा जितना उसने अपने सपने में भी नहीं सोचा होगा. और उसके बाद पुर्तगाली राजा को लोग मूर्ख कहेंगे.

फर्डिनेंड एक अमीर व्यापारी डिएगो बारबोसा के संपर्क में आया, जो भी पुर्तगाल से स्पेन भागकर आया था. उसकी मदद से, फर्डिनेंड ने अपने अभियान में निवेश करने के लिए एक बिशप, एक बैंकर और एक अन्य व्यापारी - सभी स्पेनिश से मुलाक़ात की. यह एक शुरुआत थी. लेकिन उन्हें और पैसों की जरूरत थी. उन पैसों को एकमात्र व्यक्ति, स्पेनिश राजा ही दे सकता था. राजा क्या करेगा? वो कोई नहीं जानता था. चार्ल्स - प्रथम, अभी-अभी गद्दी पर बैठा था. वो केवल सत्रह वर्ष का एक लड़का था, जिसे अभी सत्ता का कोई अनुभव नहीं था. और उसे किसी पुर्तगाली पर शक भी नहीं था.

लेकिन फर्डिनेंड ने महसूस किया कि किंग चार्ल्स उसके साथ किंग मैनुअल से ज्यादा बुरा व्यवहार नहीं कर सकता था. इसलिए, अक्टूबर, 1517 को, फर्डिनेंड ने हमेशा के लिए पुर्तगाल छोड़ दिया और स्पेन चला गया.

वहां उसने डिएगो बारबोसा की बेटी बीट्रिज़ से शादी की. वो उससे उम्र में बहुत बड़ी थी. और वो उससे कहीं ज्यादा अमीर थी.

जल्द ही, फर्डिनेंड ने खुद को स्पेनिश दरबार में पाया. वहाँ, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वो आकर्षक नहीं था. राजा को एक अनुभव वाले साहसी कप्तान की तलाश थी. वहां पर फर्डिनेंड से बेहतर योग्यता वाला और कोई नहीं था. फर्डिनेंड ने, किंग चार्ल्स को, एक विशेष, हाथ से पेंट किया हुआ चमड़े का ग्लोब दिखाकर और धैर्यपूर्वक उस पर अपने मार्ग को दिखाकर प्रभावित किया.

पुर्तगाल, फर्डिनेंड ने जोर देकर कहा, हस्तक्षेप करने में सक्षम नहीं होगा, क्योंकि फर्डिनेंड उनके इलाके से यात्रा ही नहीं करेगा. मोलुकास, उसने राजा को बताया, स्पेनिश क्षेत्र में आता था.

ग्लोब और मैप्स

मैगलन के समय से सैकड़ों साल पहले, यूरोप के लोग मानते थे कि पृथ्वी चपटी थी. फिर, पंद्रहवीं शताब्दी में, बहादुर खोजकर्ताओं ने अपने द्वारा देखे गए स्थानों के मानचित्र और चार्ट बनाए. फिर वे पृथ्वी के वास्तविक आकार की खोज करने लगे.

नई दुनिया को दर्शाने वाला पहला नक्शा 1507 में प्रकाशित हुआ, और 1508 में पहली बार गोल पृथ्वी दिखाई गई. मैगलन ने स्पेन के राजा के साथ मुलाकात के दौरान अपने साथ में चमड़े से बना, हाथ से पेंट किया हुआ ग्लोब साथ में लिया. ग्लोब ने राजा को उस काम के लिए पैसे देने के लिए प्रेरित किया. फिर भी, मैगलन के अपने ही कई लोगों का मानना था कि वे पृथ्वी के किनार से गिरकर मर जायेंगे.

स्पेन के लड़के-राजा को पुर्तगाल का सांवला, प्रखर व्यक्ति पसंद आया. उसने अपने सपने के बारे में बड़ी भावुकता से बात की थी. 1518 में वो फर्डिनेंड को मोलुकास की यात्रा का कप्तान-जनरल बनाने के लिए सहमत हुए. राजा ने दो साल की यात्रा के लिए पर्याप्त आपूर्ति के साथ पश्चिम की यात्रा के लिए पांच जहाजों का भुगतान करना स्वीकार किया. अपने सौदे को आधिकारिक बनाने के लिए, राजा और फर्डिनेंड ने एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए. उसके अनुसार फर्डिनेंड उसके द्वारा खोजे गए किसी भी द्वीप का गवर्नर होगा. छह से अधिक द्वीप मिलने पर दो द्वीप उसे दिए जाएंगे. उसे यात्रा से होने वाले मुनाफे का हिस्सा भी मिलेगा. यदि अभियान सफल होगा, तो फर्डिनेंड यूरोप के सबसे धनी, सबसे शक्तिशाली व्यक्तियों में से एक बन सकता था.

फर्डिनेंड ने इस मौके के लिए पूरी जिंदगी इंतजार किया था.

अध्याय 4

तैयारी करना

फिर सबसे कठिन समय आया. फर्डिनेंड उतनी जल्दी यात्रा पर नहीं जा सका, जितना वो चाहता था. पांच जहाजों को खोजने, मरम्मत करने और फिर उन्हें रसद से लैस करने की आवश्यकता थी. फर्डिनेंड के आदेशों के तहत चार कप्तानों के साथ चालक दल को काम पर रखा जाना था. वो जानता था कि उसे धैर्य रखना होगा और किसी भी परिस्थिति के लिए तैयार रहना होगा. क्योंकि उस समय न कोई फोन या रेडियो था, न ही कोई बचाव दल था. किसी भी आपात स्थिति में, वो और उसके लोग, अपने ही दम पर होंगे.

इसलिए फर्डिनेंड ने एक योजना बनाई. सबसे पहले, उसने जहाजों को प्राप्त किया. "त्रिनिदाद" नाम का जहाज़ उसका होगा. अन्य चार - "सैन एंटोनियो", "कॉन्सेप्सियन", "विक्टोरिया" और "सैंटियागो"- की कमान उसके कप्तानों द्वारा संभाली जाएगी.

सभी जहाज छोटे थे. उनमें से सबसे बड़ा अस्सी फीट से भी कम था. लेकिन सबसे बड़ी समस्या जहाज़ की हालत थी - वे बहुत पुराने थे. जहाज़ के मस्तूल काँप रहे थे, उनके पाल टूटकर फट गए थे. इसके अलावा, वे लकड़ी से बने थे जो इतनी सड़ गई थी, ऐसा लग रहा था कि एक बड़ी लहर सभी पांच जहाजों को डुबो देगी.

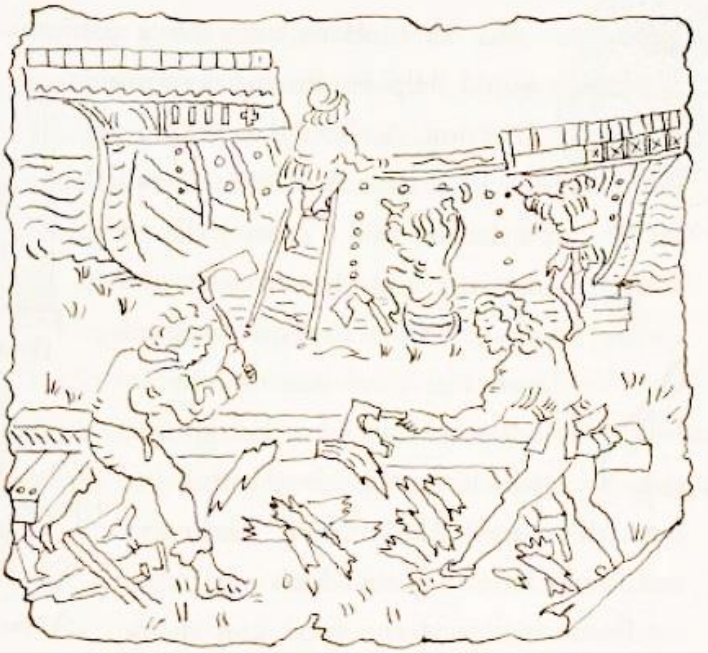

फर्डिनेंड ने जहाजों की मरम्मत करवाई. फिर उसने अपने मार्ग की योजना बनाने के लिए नक्शे और चार्ट खोजे. लेकिन वैसे नक़्शे मिले ही नहीं. फर्डिनेंड और उसके आदमी इन नई जगहों पर जाने वाले पहले यूरोपीय लोग होंगे. अधिकांश समय, जहाज अंधाधुंध नौकायन कर रहे होंगे.

कंपास

क्रॉस-स्टाफ

नेविगेट करने के लिए उपकरणों में कंपास, फर्डिनेंड को दिशा निर्धारित करने में मदद करेगा. एक रेत की घड़ी समय बताने में मदद करेगी. एस्ट्रोलैब और क्रॉस-स्टाफ नामक उपकरण अक्षांश को माप सकेंगे - जहाज भूमध्य रेखा से कितनी दूर उत्तर या दक्षिण में था. लेकिन पूरब को पश्चिम से दूरी बताने का कोई उपाय नहीं था. देशांतर, जिसका हम अब उपयोग करते हैं, तब तक खोजा ही नहीं गया था. अक्सर, फर्डिनेंड को केवल अनुमान लगाना होगा कि उसे किस रास्ते पर जाना था.

रेत घड़ी

एस्ट्रोलैब

फिर लंबी यात्रा के लिए खाने-पीने की जरूरत थी. ठंडा करने का कोई उपाय न होने के कारण, फर्डिनेंड केवल वही भोजन साथ ले सकता था जिसे खराब होने में लंबा समय लगे. उसने पनीर खरीदा - 21,120 पाउंड. और 570 पौंड मसालेदार मांस, 1,700 पौंड सूखी मछली, 6,060 पौंड नमक लगा सूअर का मांस, 72,000 पौंड नमक लगा गोमांस, और 200 बैरल सार्डिन मछली. साथ में, 512 पाउंड शहद, 3,200 पाउंड किशमिश, 21,383 पाउंड बिस्कुट, 4,700 पाउंड जैतून का तेल, 10,080 पाउंड छोले और 5,600 पाउंड बीन्स. उसने चावल, दाल, प्याज, लहसुन, चीनी, नमक, आटा, जैतून, अंजीर, मेवा और शराब भी साथ में ली. सब सामान को बैरल या टोकरियों में रखा गया था.

आवश्यकता होने पर जहाजों की समुद्र में मरम्मत करने के लिए उन्होंने औजारों का एक भंडार भी लिया.

इसके अलावा, उसने अतिरिक्त लकड़ी और रस्सियां, नई पाल के लिए कैनवास, कोलतार के बैरल, धातु के टुकड़े, और पत्थर के टुकड़े खरीदे - जिससे टूटी हुई चीज़ों को बदला जा सके.

वो यहीं नहीं रुके. उसने युद्ध के लिए भी तैयारी की. अगर समुद्री लुटेरों, दुश्मन जहाजों, या अमित्र मूल निवासियों ने हमला किया, तो वो "वापस लड़ने में सक्षम" होना चाहता था. इसलिए, उसने प्रत्येक जहाज को बारह तोपों से लैस किया. फिर उसने 6,000 पाउंड बारूद, 4,300 तीर, 1,000 लांस, 120 छोटे भाले खरीदे. उन्होंने 206 पाइक, 1,140 डार्ट्स, 200 ढालें, 100 सूट कवच, 100 हेलमेट, और 125 तलवारें भी लीं. फर्डिनेंड युद्ध के लिए भी तैयार था. लेकिन वो सिर्फ मज़बूरी में ही युद्ध लड़ना चाहता था. उसने देशी लोगों के साथ व्यापार करने के लिए उन्हें देने के लिए उपहार पैक किए.

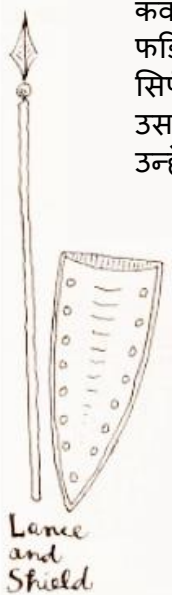

लांस

अस्त्र

मध्य युग में, शूरवीर (सैनिक) लड़ाई में खुद को बचाने के लिए, चेन लिंक, जिसे "मेल" कहा जाता है, से बनी शर्ट पहनते थे. समस्या यह थी कि "मेल" तीर, भाले या कुछ तलवारों से रक्षा नहीं कर पाती थी, इसलिए सैनिकों ने कवच की धातु प्लेटें पहनना शुरू कीं. 1400 से उन्होंने धातु के पूर्ण सूट पहने. सिर से पांव तक. (गरीब शूरवीर कभी-कभी मृत सैनिकों के शरीर से महंगे कवच चुरा लेते थे.)

कवच का एक पूरा सूट कई अलग-अलग प्लेटों से बना होता था और इसका वजन साठ पाउंड जितना होता था. विशेष रूप से गर्म मौसम में उसे पहनकर इधर-उधर घूमना मुश्किल और असुविधाजनक होता था. और 1500 के दशक के अंत तक, बंदूकों और तोपों ने लड़ाई में तलवारों और लांसों को बदल दिया, कवच का एक सूट अब एक सैनिक की रक्षा नहीं कर सकता था.

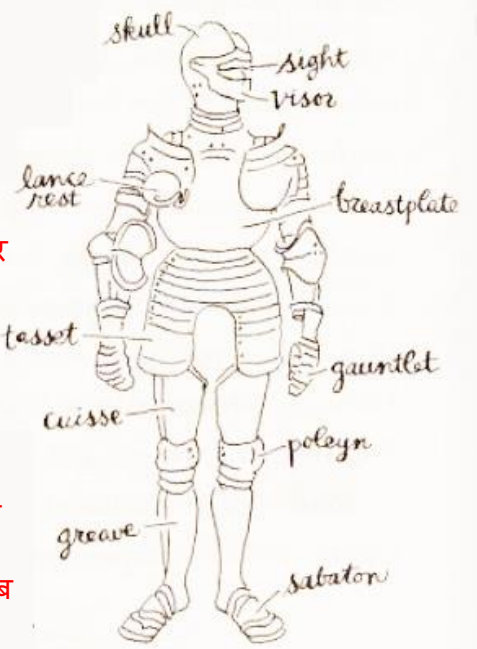

1,000 दर्पण, 600 कैंची, 1,800 घंटियाँ, 10,500 फिशहुक, 4,800 चाकू, 550 पाउंड कांच के मोती, 1,500 कंघी, 4,000 कंगन, और बहुत कुछ सामान था.

सबसे कठिन काम चालक दल को नियुक्त करना था. बहुत से आदमी नौकरी करना नहीं चाहते थे. आखिर, उन्हें दो साल के लिए साइन-अप करना पड़ता और गुप्त फर्डिनेंड ने उन्हें यह बताने से भी इनकार करता कि वे कहाँ जा रहे थे. उन्हें वो तब तक पता नहीं चलता, जब तक कि वे समुद्र में नहीं होते. नाविकों को केवल एक ही बात पता थी - यात्रा खतरनाक होगी. उन्हें बंदी बनाया जा सकता था या जहाज़ का विनाश किया जा सकता था. वे बीमारी से मर सकते था या डूब सकते थे.

लेकिन फर्डिनेंड को आखिरकार 277 ऐसे लोग मिले जो मौके का फायदा उठाने के लिए तैयार थे. उनमें से कई भागने वाले अपराधी थे, और कुछ लोग पैसे के लिए बेताब थे. वे दुनिया भर से थे - पुर्तगाल, स्पेन, हॉलैंड, जर्मनी, इटली, फ्रांस, आयरलैंड, ग्रीस, इंग्लैंड, एशिया, अफ्रीका, और कई देशों से.

पिगफेटा

फर्डिनेंड अपने साथ एक इतालवी सज्जन, एंटोनियो पिगफेटा को साथ लाने के लिए सहमत हुआ. यह एक स्मार्ट चाल थी. पिगफेटा के पास कोई नौकायन कौशल नहीं था, लेकिन वो एक शिक्षित व्यक्ति था जिसमें भाषाओं की प्रतिभा थी. जब जहाज विदेशी भूमि पर लंगर डालता, तो फर्डिनेंड अक्सर पिगफेटा को मूल निवासियों से बात करने के लिए भेजता था. पिगफेटा जल्द ही फर्डिनेंड मैगलन का सबसे बड़ा प्रशंसक बन गया. और यही कारण है कि इतिहासकार फर्डिनेंड की यात्रा के बारे में हम इतना कुछ जानते हैं, क्योंकि पिगफेटा ने एक डायरी रखी थी. वो डायरी आज तक ज़िंदा है.

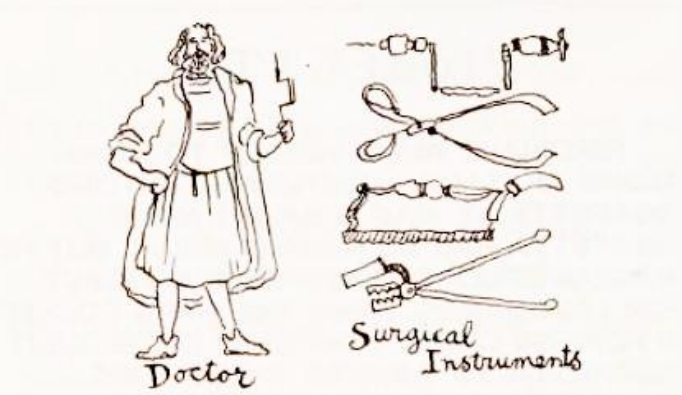

अधिकांश लोग नाविक थे, लेकिन कुछ अत्यधिक कुशल थे - बढ़ई, रसोइया, लोहार, पाल बनाने वाले और नाव चलाने वाले. वहाँ अनुभवी अधिकारी के साथ-साथ एक डॉक्टर और एक पुजारी भी था.

जहाज़ों के कप्तानों को ढूंढना मुश्किल था. फर्डिनेंड उन पुरुषों को काम पर रखना चाहता था जिन्हें वो जानता था, ऐसे पुर्तगाली कामरेड जिन पर वो भरोसा कर सकता था. लेकिन स्पेन में दो आदमी - जो यात्रा के लिए पैसे दे रहे थे, उन्हें वो विचार पसंद नहीं आया. अगर फर्डिनेंड के दोस्त कप्तान होंगे, तो वो बहुत शक्तिशाली हो जाएगा. इसके अलावा, उन्होंने महसूस किया कि राजा ने फर्डिनेंड को बहुत अधिक धन देने का वादा किया था, जिसके वो हकदार थे. इसलिए, उन लोगों ने फर्डिनेंड से छुटकारा पाने का फैसला किया. उन्होंने फर्डिनेंड को स्पेन के तीन कप्तान नियुक्त करने के लिए कहा. इन कप्तानों ने वास्तव में उन लोगों लिए काम किया और फर्डिनेंड को समुद्र में मारने की योजना बनाई.

जैसे कि वो बुरा नहीं था, पुर्तगाल के राजा मैनुअल को फर्डिनेंड की योजना की भनक लग गई. उसे बहुत गुस्सा आया. राजा को उम्मीद नहीं थी कि फर्डिनेंड स्पेन में जाकर सफल होगा. फिर राजा ने फर्डिनेंड पर देशद्रोही होने का आरोप लगाया. फर्डिनेंड की यात्रा को विफल करने के लिए राजा अपनी पूरी कोशिश करने जा रहा था.

जहाजों के तैयार होने में डेढ़ साल लग गया. आखिरकार, वो पल आया जिसका फर्डिनेंड ने बचपन से सपना देखता आया था.

फर्डिनेंड अभियान का कप्तान-जनरल था. उसके लिए और कुछ मायने नहीं रखता था. उसकी युवा पत्नी या नवजात पुत्र भी नहीं. न ही एक अजनबी समुद्र का खतरा. न ही राजा मैनुअल की धमकियाँ. फर्डिनेंड को इस बात की भी परवाह नहीं थी कि जहाज पर दुश्मनों का एक गुट उसे जल्द ही घेर लेगा.

क्योंकि धन, यश और कीर्ति समुद्र के पार थी. फर्डिनेंड उसके बारे में निश्चित था.

अध्याय 5

खतरनाक समुद्र

मंगलवार, 20 सितंबर, 1519. फर्डिनेंड के पांच जहाज अपनी महान यात्रा शुरू करने वाले थे.

सेविल के महान स्पेनिश शहर के पास सैन लुकर डी बारामेडा नामक एक बंदरगाह से फर्डिनेंड और उसके लगभग तीन सौ लोगों के दल ने अलविदा कहा. बंदूकें चलाई गईं, पाल उठाए गए. एक तेज़ हवा ने उनके जहाजों को अटलांटिक महासागर में धकेल दिया. जैसे ही वे दूर गए, जहाज पर सवार लोगों ने उस तमाम दौलत के बारे में सोचा, जिसे उन्हें खोजने की उम्मीद थी. लेकिन उनके परिवार वालों को डर था कि क्या वे फिर कभी उन आदमियों को दुबारा देख पाएंगे.

पहला पड़ाव स्पेन के दक्षिण में कैनरी द्वीप समूह था. उन्होंने तुरंत लंगर डाला, पर तभी फर्डिनेंड को एक गुप्त संदेश मिला.

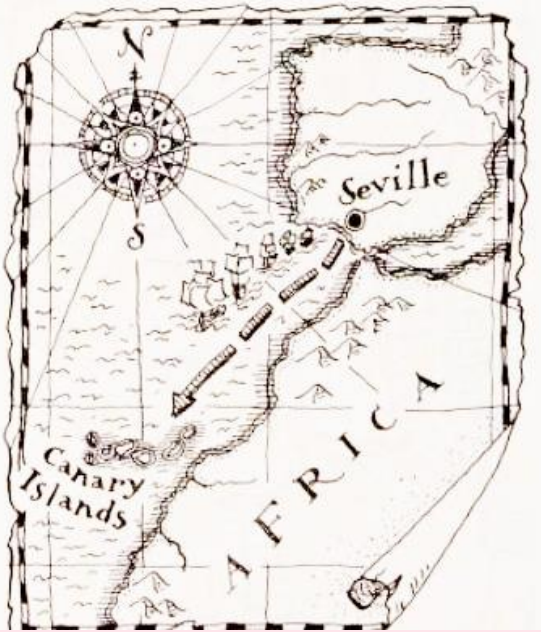

उसे बुरी खबर मिली! स्पेन के तीन कप्तान उसे मारने की साजिश रच रहे थे. इतना ही नहीं - पुर्तगाल के राजा मैनुएल ने उसका शिकार करने के लिए जहाज भेजे थे.

फर्डिनेंड ने उससे भी बुरी परिस्थितियों का सामना किया था. वो डरता नहीं था. उसने तुरंत लड़ने के बजाय अपने दिमाग का इस्तेमाल किया. स्पैनिश कप्तानों को भ्रमित करने के लिए, उसने उनकी हर बात से सहमत होने का नाटक किया. पुर्तगाल से दुश्मन के जहाजों से बचने के लिए, उसने अफ्रीकी तट के साथ दक्षिण की ओर जाने का आदेश दिया. वो एक ऐसा मार्ग था जिस पर कोई भी फर्डिनेंड को नहीं पकड़ सकता था.

फर्डिनेंड के जहाज शांत समुद्रों के माध्यम से भूमध्य रेखा की ओर बढ़े. लेकिन उस देश के पास एक भयानक तूफान उठा जिसे अब हम सिएरा लियोन कहते हैं. भारी बारिश हुई. बिजली से आसमान चमक उठा. सबसे खराब बात तेज हवाएं थीं, जो जहाजों को पलट सकती थीं.

चालक दल डर गया था. तभी मस्तूलों के शीर्ष और रस्सियों में आग लग गई. क्या हो रहा था? जहाज़ पर लोग रोने लगे और उन्होंने प्रार्थना की.

जादू की तरह, आग की लपटें गायब हो गईं. . . फिर वे लौटीं, बार-बार. फिर भी कभी कुछ भी नहीं जला! अंत में, चालक दल को एहसास हुआ कि वे सेंट एल्मोस की आग देख रहे थे. आज हम जानते हैं कि वो तेज चमक, हवा में बिजली के कारण होती है. फर्डिनेंड और उनके आदमियों के लिए, सेंट एल्मोस की आग एक संकेत थी कि भगवान उनकी रक्षा करेंगे. कुछ भी हो, वे बच जाएंगे.

दो सप्ताह तक तूफान चलता रहा. फिर, अंत में, लहरें थम गईं. फर्डिनेंड ने पक्षियों को अपने ऊपर उड़ते देखा और मछलियां को पानी में कूदते हुए देखा. लेकिन उसने आराम करने की हिम्मत नहीं की. वो जानता था कि जहाज़ पर एक अलग तरह का तूफान उठ रहा था. स्पेनिश कप्तानों में से एक, जुआन डी कार्टाजेना, एक विद्रोह की योजना बना रहा था - समुद्र में विद्रोह. लेकिन चतुर फर्डिनेंड वो नहीं होने देने वाला था.

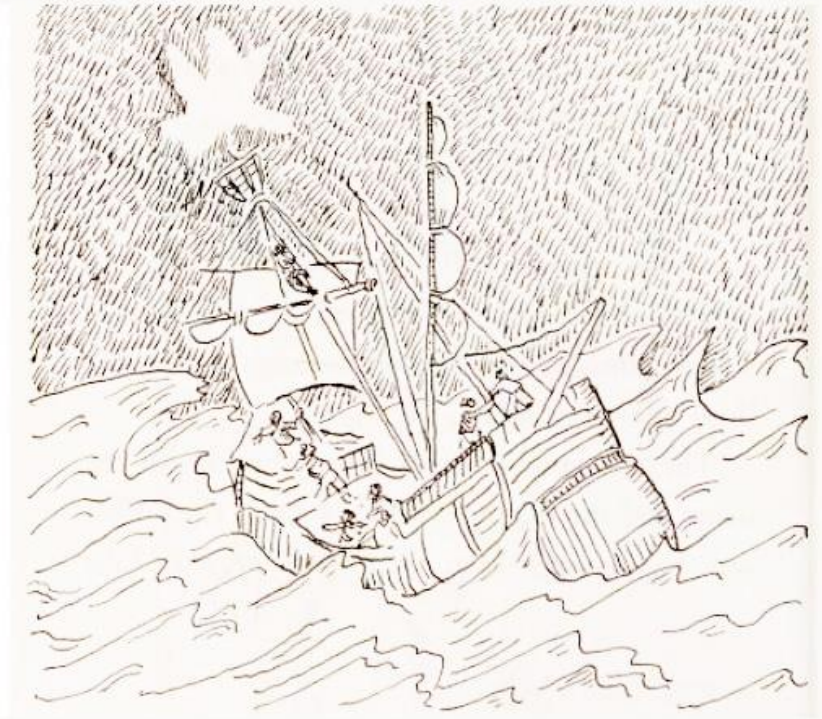

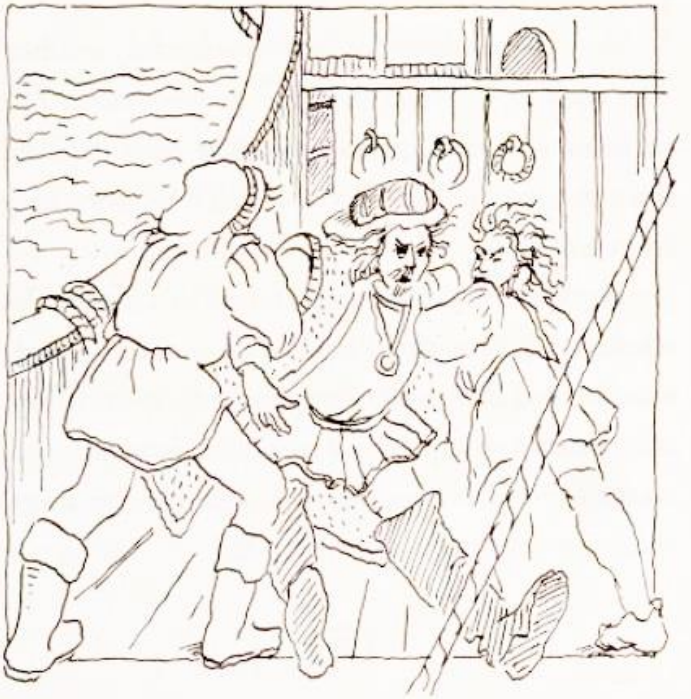

नवंबर में एक दिन वो अपने सभी कप्तानों से मिला. कार्टाजेना ने घोषणा की कि वो अब फर्डिनेंड के आदेशों का पालन नहीं करेगा. फर्डिनेंड ने फिर बस अपना हाथ ऊपर उठाया. वो बस एक संकेत था! तभी दरवाजा खुला और सशस्त्र नाविक उसकी तरफ दौड़ पड़े. उन्होंने कार्टाजेना को पकड़ लिया, उसे डेक पर घसीटा, और उसे बेड़ियों में बाँध दिया. अन्य दो स्पेनिश कप्तानों ने भी महसूस किया कि फर्डिनेंड ने उन्हें हरा दिया था. कोई गोली चलाए बिना, फर्डिनेंड ने विद्रोह को विफल कर दिया था.

अब वो सुहावने मौसम का लुत्फ उठा सकता था. भूमध्य रेखा निकट थी, और हवा गर्म थी. लोग डेक पर लेट गए, और शरीर को धूप से सेंकने लगे. तूफान में भीगने से जहाज आखिर में सूख गए. लेकिन फिर सब कुछ उल्टा हो गया.

हवा पूरी तरह से रुक गई. पाल दिन भर और पूरी रात सपाट पड़े रहे. वे मुश्किल से समुद्र में आगे बढ़ पाए. समुद्र कीचड़ की तरह लग रहा था. सूरज इतना गर्म था कि तख़्ते फट गए और टार पिघल गया. खाना खराब हो गया, पानी कम हो गया. लोग बेहोश हो गए. जहाजों के चारों ओर, शार्क धीरे-धीरे तैरने लगीं, जैसे वो लोगों के मरने की प्रतीक्षा कर रही हों.

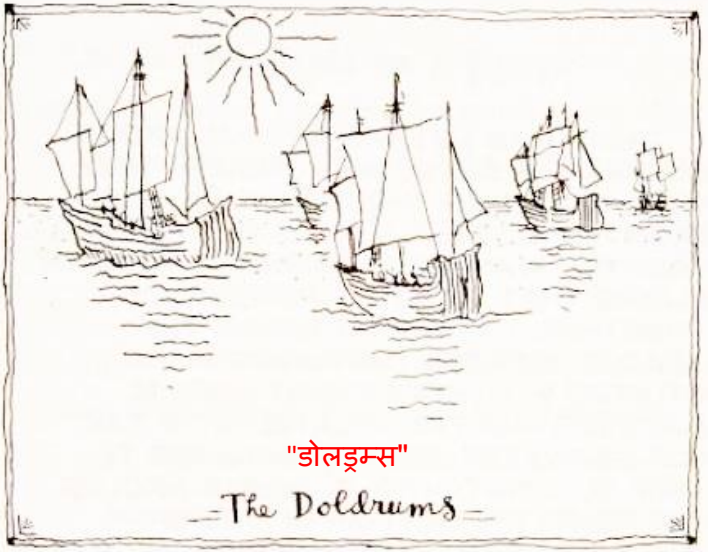

जहाज "डोलड्रम्स" में थे, जो अटलांटिक महासागर का एक हवा-रहित क्षेत्र था. वहां बीस दिनों तक, हल्की हवा भी नहीं चली. चालक दल ने उसके लिए फर्डिनेंड को दोषी ठहराया. उसका आदेश ही उन्हें इस भयानक जगह पर लाया था. शायद स्पेन का कप्तान सही था —उन्हें भी बगावत करनी चाहिए. फर्डिनेंड ने लोगों के गुस्से को भांप लिया पर उसने कुछ नहीं कहा. कई दिनों तक फर्डिनेंड किसी ने नहीं मिला. वो इंतजार कर रहा था, वो हवा की प्रतीक्षा कर रहा था.

उस ज़माने के जहाज

फर्डिनेंड के जहाजों के बारे में कुछ खास नहीं था, भले ही वे घर से हजारों मील की यात्रा कर रहे थे. उस समय के सभी जहाजों की तरह, वो भी खुरदुरे लकड़ी के तख्तों से बने थे जो पूरी तरह से एक साथ फिट नहीं होते थे. पानी के रिसने या लीक को रोकने के लिए, तख्तों के बीच की जगहों को हेम्प (जिससे रस्सी बनाई जाती है) से भरा जाता है और फिर उसे टार से लेपित किया जाता है. लेकिन समुद्री जल हमेशा अंदर घुस जाता था. पालों ने तीन मस्तूल भी लकड़ी के बने थे. जहाज़ में कोई इंजन नहीं था, इसलिए यदि हवा रुक जाती या पाल टूट जाते या मस्तूल गिर जाते, तो जहाज चल नहीं सकता था.

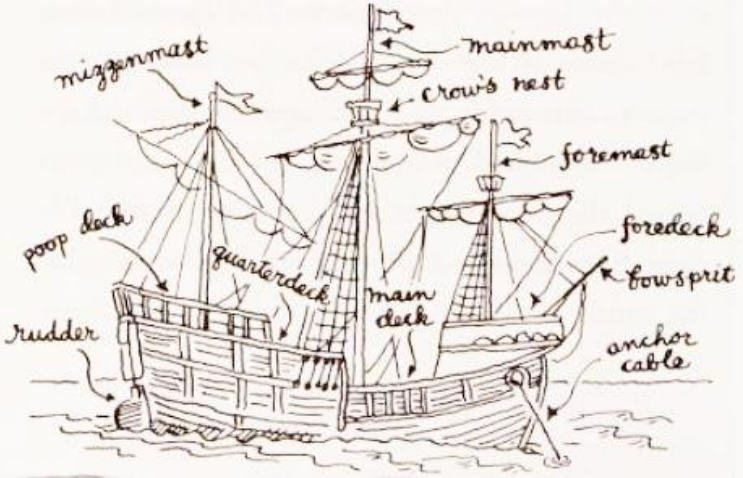

इक्कीसवें दिन हवा के छोटे-छोटे झोंकों ने पानी को झकझोरना शुरू किया. धीरे-धीरे झोंके तेज़ हुए और हवा ने पालों को भरा. जहाज चलने लगे. अंत में, वे दक्षिण अमेरिका जा रहे थे. वहीं से एल-पासो की तलाश शुरू होनी थी.

अब बगावत की कोई बात नहीं थी. चालक दल, जमीन पर पहुंचने के लिए उत्सुक था. क्योंकि उन दिनों जहाज पर जीवन कठिन था. नाविकों के जीवन में कोई गोपनीयता नहीं थी - उनके पास कमरे भी नहीं थे. वे डेक पर एक साथ मिलकर सोते थे.

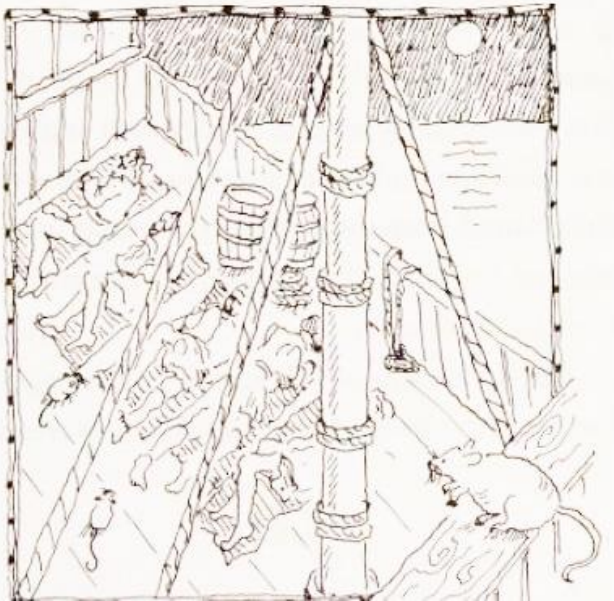

अंधेरा होते ही चूहे और तिलचट्टे उनके शरीर पर रेंगने लगते थे. जब बारिश होती, तो चालक दल भीग जाता और उसके साथ ही उनका सारा सामान भी भीग जाता था.

डेक सिर्फ शयनकक्ष नहीं था - वो रसोईघर भी था. भले ही जहाज लकड़ी का बना था पर उनका भोजन खुली आग पर डेक पर ही पकाया जाता था. चूंकि हवा कभी-कभी गर्म राख और आग की लपटों को उड़ाती थी, जहाज के जलने की स्थिति में पानी के बैरल पास में ही रखे जाते थे. बिना चाकू, कांटे या चम्मच के भोजन सीधा थाली में ही परोसा जाता था. लोग खाने के लिए अपने हाथों का इस्तेमाल करते थे.

शौचालय भयानक था. वो सिर्फ एक पिंजरा था जो जहाज के पिछले हिस्से से लटका रहता था. यदि लहरें ऊँची होतीं, तो कोई उस तक पहुँच नहीं पाता था.

तब लोग "बिल्ज" का इस्तेमाल करते थे - जहां समुद्री जल, जहाज की पतवार, या तल में रिसता था. समय के साथ, "बिल्ज" एक सीवर बन जाता था. वहां बदबू इतनी भयानक होती थी कि वो लोगों को बीमार कर देती थी.

फिर भी, चाहे उन्हें कितना भी बुरा लगे लोग अपना काम करते थे. नहीं तो उन्हें, फर्डिनेंड को जवाब देना पड़ता था. वे अपने कप्तान-जनरल को पसंद नहीं करते थे, लेकिन वे उससे डरते थे. उसके काले बाल और पूरी काली दाढ़ी ने, फर्डिनेंड को बहुत डरावना बना दिया था. फर्डिनेंड बहुत कम बोलता था और वो कभी भी अपने विचार साझा नहीं करता था. उसे केवल अपने ऊपर और अपने भगवान पर भरोसा था.

13 दिसंबर को, समुद्र में लगभग तीन महीने के बाद, जहाज ब्राजील पहुंचे. वे स्पेन से पाँच हज़ार मील की दूरी पर आज के रियो-डी-जनेरियो के पास एक भव्य बंदरगाह में थे. उनके चारों ओर जंगल (रेन-फारेस्ट) था, जिसकी एक अद्भुत महक थी. बर्फ की ठंडी धाराओं से पानी पीना और ताजा खाना कितना सुखद लग रहा था!

सबसे अच्छी बात यह थी कि वे लोग पुर्तगाली क्षेत्र से बाहर थे. वहां उन्हें डराने के लिए कोई दुश्मन नहीं था.

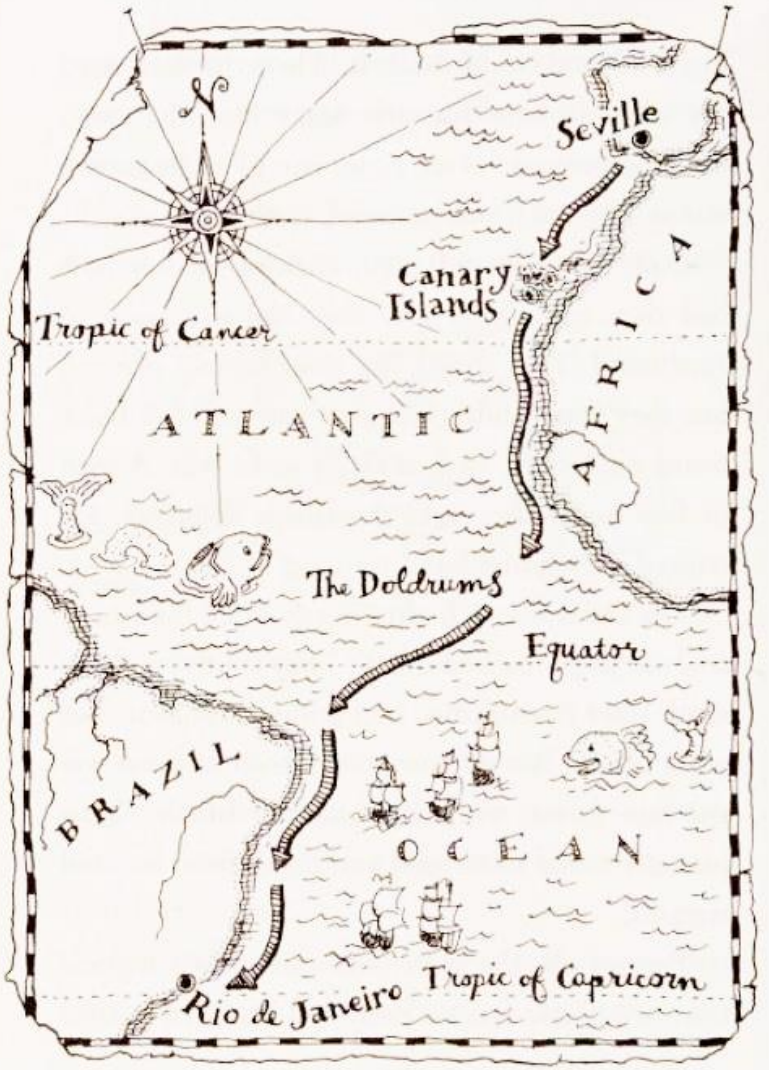

ब्राजील के मूल निवासी अपने टैटू से भले ही डरावने लगते हों, लेकिन वे लोग मिलनसार थे. वे चालक दल के साथ व्यापार करके खुश थे. एक ने अनानास की एक टोकरी खरीदी, एक ने खेलने वाला ताश, और पांच मुर्गियां. चालक दल ने असामान्य बिस्तरों को भी आज़माया - पेड़ों के बीच फैले झूलों को.

उनके लिए ब्राजील एक छुट्टी की तरह था. लेकिन, क्रिसमस के ठीक बाद, फर्डिनेंड ने जहाजों को दक्षिण की ओर जाने का आदेश दिया. एल-पासो को खोजने का अब समय आ गया था.

अध्याय 6

ठंड

पहले तो वो आसान लग रहा था. लेकिन 11 जनवरी, 1520 को, फर्डिनेंड ने तट पर एक व्यापक नाला देखा. क्या वो जलडमरूमध्य था?! उसका आत्मविश्वास बढ़ गया.

लेकिन वो नाला सिर्फ एक बड़ी नदी थी जिसे अब हम "उरुग्वे" कहते हैं. वहां नरभक्षी लोग रहते थे.

चालक दल के लोग डरे हुए थे. फिर से बगावत की बात शुरू हो गई. स्पैनिश कप्तानों ने फुसफुसाया कि फर्डिनेंड को नहीं पता था कि एल-पासो कहाँ था. अब पूर्व की ओर जाकर ही मोलुकास पहुँच जा सकता था.

फर्डिनेंड गुस्से में था. वो खोज छोड़ने वाला नहीं था. सच था, जलडमरूमध्य को खोजना कठिन था - लेकिन परमेश्वर उसे खोजने में, उसकी मदद करेगा. उसने घोषणा की, कि जलडमरूमध्य दक्षिण में थोड़ा आगे था. फिर उसने चुपचाप प्रार्थना की कि वो बात सच निकले.

जहाज़ रवाना हुए, त्रिनिदाद, विक्टोरिया, कॉन्सेप्सियन, सैंटियागो और सैन एंटोनियो. इससे पहले कोई भी यूरोपीय यहाँ नहीं आए थे. फरवरी आ गया, और सर्दी के एक संकेत ने, गर्म हवा को ठंडा कर दिया. दक्षिण अमेरिका में, सर्दियाँ अप्रैल से सितंबर तक रहती हैं. फिर, दक्षिण की ओर, मौसम असामान्य रूप से ठंडा हो गया. वहां सिर्फ सर्दी नहीं थी - वहां बर्फ जमी हुई भूमि थी.

एक धूसर आकाश के नीचे, हिमखंड पानी से बाहर निकल आए. विशाल लहरों ने पाँच जहाजों को इधर-उधर घुमाया और डेक के नीचे, पानी हर जगह से बहने लगा.

एक तेज़ हवा ने पालों को फाड़ दिया और कभी-कभी जहाजों को पीछे की ओर धकेला. खाना बनाना असंभव था - डेक पर आग हर समय बुझती रहती थी. ओले और फिर बर्फ लोगों के कपड़ों पर और उनके शरीर पर जम गई. पाल और रस्सियों की तरह, लोगों के बाल और दाढ़ी भी, बर्फ से ढक गई.

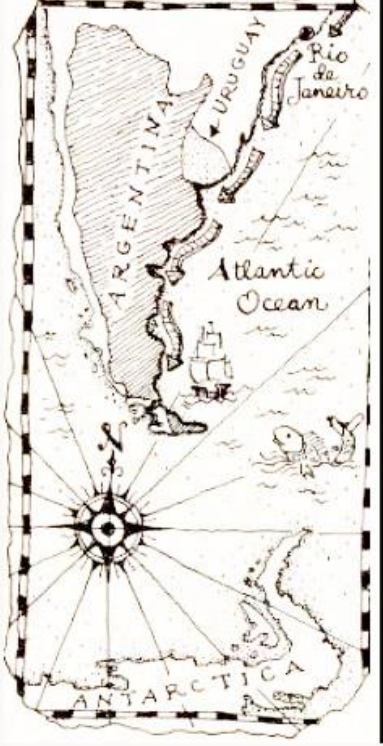

मार्च तक, वे एक हज़ार भयानक मील की यात्रा कर चुके थे. आज हम जानते हैं कि उनके जहाज अंटार्कटिका के पास थे, लेकिन तब ऐसी जगह के बारे में किसी ने नहीं सुना था. चालक दल का मानना था कि कप्तान-जनरल पागल था. एल-पासो एक परी कथा थी - वो अस्तित्व में थी ही नहीं.

लेकिन फर्डिनेंड, जलडमरूमध्य के अलावा कुछ नहीं सोच सकता था. उसे वो खोजना ही था. लोगों का कोई भी विरोध उसे वापस लौटने के लिए मना नहीं सका. अपने दृढ़ संकल्प को दिखाने के लिए, वो डेक पर उनके साथ शामिल हो गया.

वो किसी से भी ज्यादा मेहनत करते हुए, जहाज को खुद चलाने लगा. हफ्तों तक वो रात में सिर्फ दो घंटे की नींद लेता था. उसने कभी अपने कपड़े नहीं बदले.

छह सौ मील बाद, अभी भी कोई जलडमरूमध्य नहीं था.

फर्डिनेंड ने महसूस किया कि जहाजों को एक सुरक्षित बंदरगाह में सर्दियों के लिए इंतजार करना होगा. 31 मार्च को, जहाजों ने पोर्ट सैन जूलियन में तीस फुट की लहरों पर सवारी की, एक ग्रे और चट्टानी खाड़ी जिसे अब हम अर्जेंटीना कहते हैं. वहां समुद्री तट पर कोई लोग नहीं थे, केवल काले और सफेद पक्षी जो उड़ नहीं सकते थे. वहां काले, चिकने जानवर पानी में खेल रहे थे. आज हम जानते हैं कि वे पेंगुइन और सील थे. लेकिन फर्डिनेंड और उसके आदमियों ने उस जैसे जीव पहले कभी नहीं देखे थे.

खाड़ी ने जहाजों को हवा और लहरों से आश्रय दिया. फिर भी, चालक दल असहज था. वे कहाँ थे? वे घर जाना चाहते थे. एक बार फिर, स्पेनिश कप्तानों ने विद्रोह करने की कोशिश की. अप्रैल फूल्स-डे की आधी रात को, तीस हथियारबंद लोगों ने सैन एंटोनियो को जब्त कर लिया. उसके बाद विक्टोरिया और फिर कॉन्सेप्सियन को ज़ब्त किया गया. फर्डिनेंड के प्रति वफादार नाविकों को बेरहमी से डाल दिया गया.

ऐसा लग रहा था जैसे कैप्टन-जनरल ने आखिरकार अपनी कमान खो दी हो.

लेकिन फर्डिनेंड के पास अभी भी उसका "त्रिनिदाद" और वफादार सैंटियागो था. वो तेज-तर्रार और चालाक था और उसने एक नई योजना बनाई. जैसे ही सूरज ढल गया और कोहरा छा गया, छह आदमी विक्टोरिया की ओर दौड़े. उन्होंने अपने विद्रोही कप्तान के लिए एक पत्र लिखा जिसमें कहा गया था कि फर्डिनेंड उससे एक सौदा करने के लिए तैयार था.

जैसे ही छह लोग जहाज पर चढ़े, सोलह अन्य लोग विक्टोरिया पर सवार हो गए. जब कप्तान पत्र को पढ़कर हंस रहा था तभी फर्डिनेंड के एक आदमी ने उसे पकड़ लिया और उसे चाकू से मार डाला. जैसे ही विद्रोही कप्तान के शरीर को देखने के लिए लटकाया गया, विक्टोरिया के चालक दल ने आत्मसमर्पण कर दिया. जहाज एक बार फिर से फर्डिनेंड के थे.

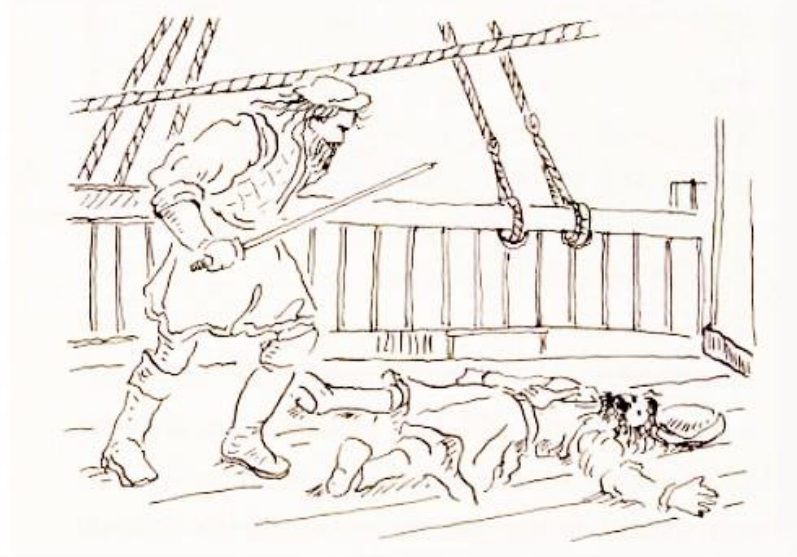

विक्टोरिया फर्डिनेंड के दो जहाजों के साथ जुड़ गई और उसने बंदरगाह के निकास को रोक दिया.

सैन एंटोनियो और कॉन्सेप्सियन फंस गए थे - कोई रास्ता नहीं था. फर्डिनेंड ने स्पेनिश कप्तानों को पछाड़ दिया था. विद्रोह समाप्त हो गया था.

लेकिन फर्डिनेंड समाप्त नहीं हुआ था. वो चाहता था कि प्रत्येक नाविक को पता चले कि अवज्ञा का अर्थ मृत्यु होगी. इसलिए, उसने विक्टोरिया के मृत कप्तान का सिर कलम कर दिया. कॉन्सेप्सियन के कप्तान का भी वही हश्र हुआ.

फिर, पैंतालीस विद्रोहियों के टखनों को एक दूसरे से बांध दिया गया. शेष सर्दियों के लिए, उन्हें सबसे कठिन, गंदे काम करने को मजबूर किया गया. जुआन डी कार्टाजेना की सजा कहीं ज्यादा खराब थी. फर्डिनेंड ने घोषणा की कि वो उसे इस बर्फीले बंजर भूमि में पीछे छोड़ जाएगा.

अब फर्डिनेंड और चालक दल सर्दी के लिए तैयार हो गए. उन्होंने सील्स का शिकार किया और गर्म रखने के लिए खुद को खाल में लपेटा. दिन के उजाले के कुछ घंटों में, उन्होंने झोंपड़ियों का निर्माण किया और जलाऊ लकड़ी एकत्र की.

अब, इस अजीब और बर्फीले देश में, जहां हर दिन तूफान आता था, कप्तान-जनरल और उनके आदमियों को जीवित रहने के लिए भोजन खोजना पड़ता था. वे भाग्यशाली थे. वहां शिकार करने के लिए बत्तख और पक्षी थे, और पानी में केकड़े और मछलियाँ थीं - जो सर्दियों में खाने के लिए पर्याप्त थे.

फर्डिनेंड ने जहाजों को भी खाली कर दिया था, ताकि उनकी मरम्मत की जा सके. एल-पासो की खोज फिर से शुरू होने पर उन्हें अच्छी हालत में रहने की जरूरत थी.

तभी फर्डिनेंड ने एक भयानक खोज की, उसका आधा खाना और सामान गायब था! फर्डिनेंड के अभियान के स्पेन छोड़ने से पहले ही उन्हें जहाजों से उतार दिया गया था.

उसका कौन जिम्मेदार था?

पुर्तगाल के राजा मैनुअल, जो एक लंबे अर्से से फर्डिनेंड का दुश्मन था.

महीने बीत गए. फर्डिनेंड और उसके आदमी सिर्फ एक-दूसरे को कंपनी देने के लिए थे. फिर, जून में एक दिन, एक नग्न आदमी दिखाई दिया. गाते और नाचते हुए उसने अपने सिर पर रेत फेंकी.

वो विशालकाय व्यक्ति बहुत लंबा था - फर्डिनेंड केवल उसकी कमर तक आया. लेकिन वो मिलनसार था, और जल्द ही उस जैसे अन्य लोग भी प्रकट हुए. फर्डिनेंड ने इन लोगों को "पेटागोन्स" नाम दिया, जिसका अर्थ है "बड़े पैर" वाले. उनकी ज़मीन पेटागोनिया के नाम से जानी जाने लगी और आज भी उसका वही नाम है.

अगस्त में, वो स्थान छोड़ने के लिए पर्याप्त गर्म हो गया. फर्डिनेंड ने चालक दल के लिए घोषणा की, "हम एल-पासो की खोज तब तक करेंगे जब तक हम उसे ढूंढ नहीं लेते." लेकिन 24 अगस्त को केवल चार जहाजों ने बंदरगाह छोड़ा. पांचवां, सैंटियागो, कुछ हफ्ते पहले ही एक तूफान में डूब गया था.

एक तेज हवा ने त्रिनिदाद, विक्टोरिया, कॉन्सेप्सियन और सैन एंटोनियो को समुद्र में तैरा दिया. जैसे ही फर्डिनेंड और चालक दल रवाना हुए, कार्टाजेना किनारे पर खड़ा हो गया.

उसके बारे फिर कभी किसी ने नहीं सुना.

अध्याय 7

प्रशांत महासागर

खुले समुद्र में मौसम खराब था, इसलिए अभियान ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाया. अगले दो महीनों के लिए, जहाजों को एक नदी में लंगर डालना पड़ा. लेकिन, आखिर में हवा ने अपना दंश खो दिया. दिन इतने लंबे हो गए कि दिन में सिर्फ तीन घंटे ही अँधेरा होता था.

18 अक्टूबर को, फर्डिनेंड ने पाल लगाने का आदेश दिया, और तीन दिन बाद जहाजों ने नीले-हरे रंग की खाड़ी में प्रवेश किया. चट्टानी तट के ऊपर बर्फ से ढके पहाड़ इतने ऊँचे खड़े थे कि बादल उनकी चोटियों के चारों ओर बहते थे. वे उस देश में पहुंचे जिसे अब हम चिली कहते हैं.

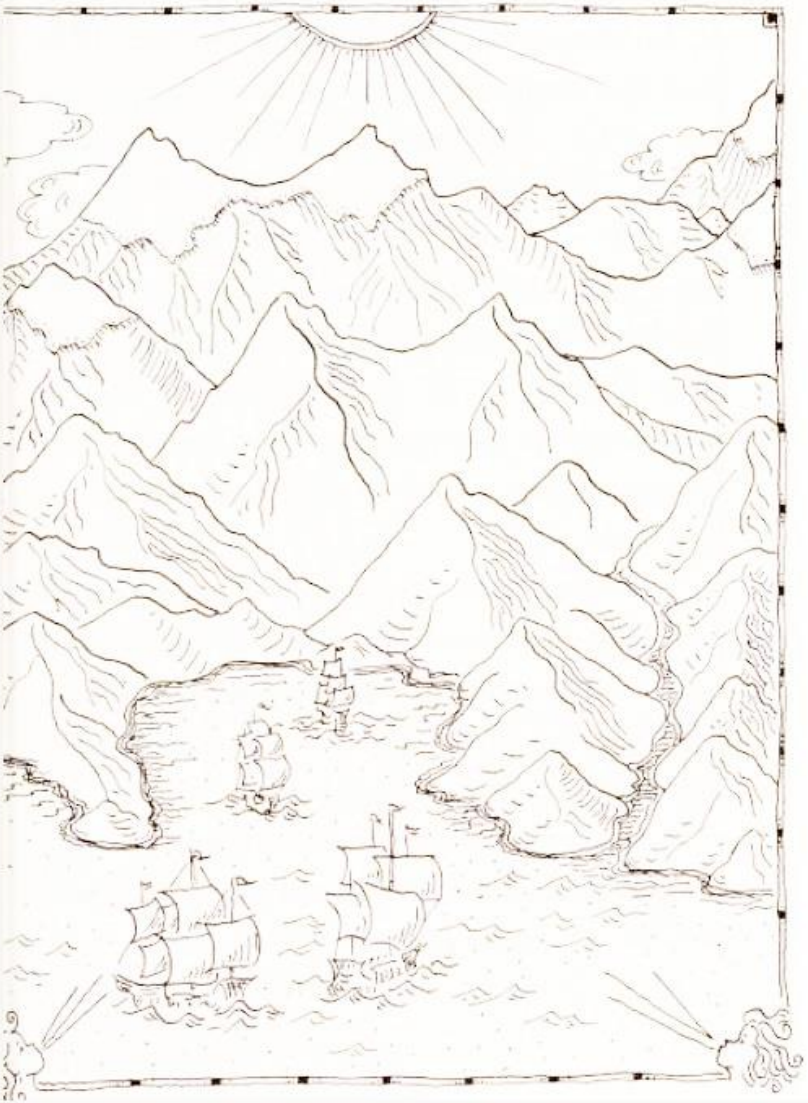

कप्तानों को, वो सुंदर खाड़ी अब अभियान का अंत लग रही थी. लेकिन फर्डिनेंड को एक विचार आया. उसने अपने दो जहाजों, कॉन्सेप्सियन और सैन एंटोनियो को पश्चिम की ओर जाने का आदेश दिया, यह देखने के लिए कि वो कहाँ जाता था. लेकिन दोनों जहाजों के निकलने के ठीक बाद, एक शक्तिशाली तूफान आया. लहरों के बाद लहरे आईं, कुछ मस्तूलों से भी ऊंची लहरों ने फर्डिनेंड के अपने जहाज़ को भी धराशायी कर दिया. लग रहा था कि त्रिनिदाद भी डूब जायेगा. विक्टोरिया पर चालक दल के लोग, पानी में बह गए. ऐसा लग रहा था कि कॉन्सेप्सियन और सैन एंटोनियो भी गायब हो गए थे. क्या वे डूब गए थे?

दो दिन बीत गए. फर्डिनेंड निराशा में था. इतनी दूर पहुंचने के बाद भी उसे असफलता ही मिली थी. फिर तीसरे दिन अचानक एक लुकआउट आदमी चिल्लाया. पश्चिम से दो जहाज आ रहे थे - कॉन्सेप्सियन और सैन एंटोनियो!

तूफान से बचने के लिए, वे एक खाड़ी से दूसरी खाड़ी में चले गए, फिर तीसरी, एक जंजीर की तरह. . . और उन्होंने एल-पासो को खोज निकाला था!

उनकी खोज का मतलब था कि वास्तव में दक्षिण अमेरिका की नोक के चारों ओर नौकायन करके जाने का कोई रास्ता था.

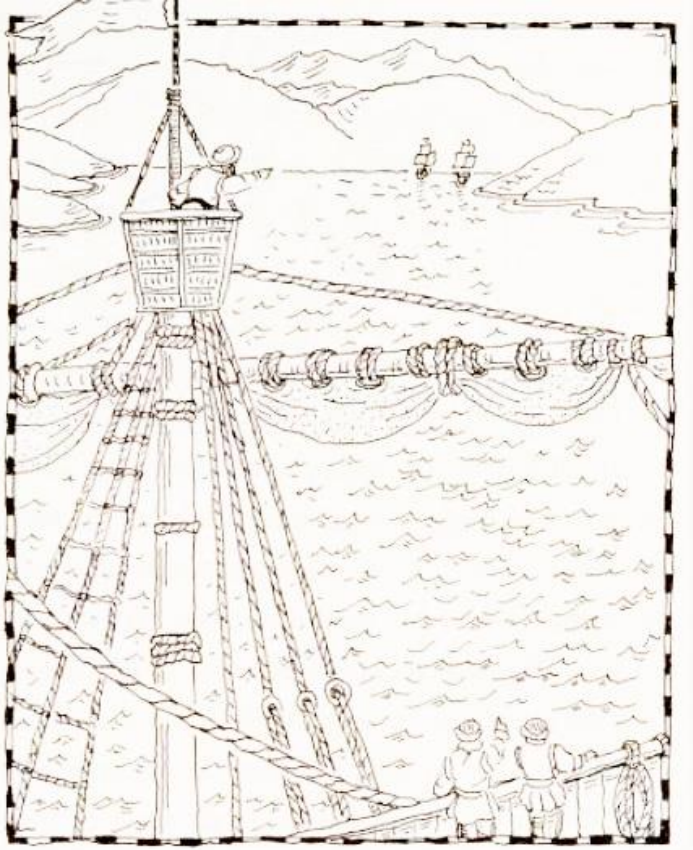

यदि अभियान जलडमरूमध्य के बीच से अपना रास्ता बना सके, तो वो पश्चिम की ओर जाए तो वो मोलुकास की ओर बढ़ सकता है.

चारों जहाजों के लोग खुशी से झूम उठे. उन्होंने नृत्य किया, वे गले मिले, वे ऊपर और नीचे कूदे. और फिर उन्होंने प्रार्थना की. जैसे ही तोपें चलाई गईं, फर्डिनेंड ने अपना सिर झुकाया और क्रॉस का चिन्ह बनाया. उसने एल-पासो को "आल-सेंट्स जलडमरूमध्य" का नाम दिया. आज हम इसे “मैगलन” जलडमरूमध्य कहते हैं.

हालांकि, अच्छी खबर के साथ एक बुरी खबर भी आई. जलडमरूमध्य को खोजने वाले लोगों ने बताया कि वो काफी संकरा था और गतिरोधों से भरा हुआ था. उसके माध्यम से यात्रा करना लंबी और कठिन होगी. यदि जहाजों ने गलत मोड़ ले लिया, तो वे हफ्तों तक खो सकते थे.

फर्डिनेंड के कप्तानों ने उन्हें वहां पर रुकने की सलाह दी. सभी लोग थके हुए थे. आपूर्ति कम थी. स्पेन के राजा के लिए जलडमरूमध्य का दावा करो, उन्होंने सलाह दी. लेकिन उसमें जाओ मत.

लेकिन फर्डिनेंड ने वो करने से मना कर दिया. उसके लिए वहां रुकना एकदम पागलपन था. वे जलडमरूमध्य से होते हुए समुद्र तक पहुंचेंगे, वो चिल्लाया, "हालाँकि हमारे पास खाने के लिए कुछ नहीं है, सिवाए हमारे मस्तूल से लिपटे हुए चमड़े के अलावा."

इसलिए, वे तीन खाड़ियों में से होते हुए जलडमरूमध्य में चले गए. एक हजार फीट ऊंची ग्रेनाइट की दीवारों ने उन्हें दोनों तरफ से घेर लिया. वे एक तिराहे पर पहुंचे - अब किस तरफ?

फर्डिनेंड ने कॉन्सेपसियन और सैन एंटोनियो को एक तरफ जाने का आदेश दिया. उनका त्रिनिदाद और विक्टोरिया दूसरी तरफ गया.

कप्तान-जनरल के मार्ग पर भारी धुंध छाई थी. कीलों के समान नुकीली चट्टानें पानी से बाहर निकलीं थीं. यथासंभव सावधानी से संचालन करते हुए, फर्डिनेंड का जहाज और विक्टोरिया कई दिनों तक चलते रहे. अंत में झरनों से भरे चीड़ के पहाड़ दिखाई देने लगे. क्या समुद्र पास हो सकता था?

फर्डिनेंड ने एक स्काउटिंग पार्टी भेजी. और, तीन दिन बाद, स्काउट्स लौट आए. वे जलडमरूमध्य के अंत तक पहुँच चुके थे! आगे खुला पानी था!

फर्डिनेंड ख़ुशी से रोने लगा. अगर किसी ने उसके आंसू देखे तो उसे उसकी परवाह नहीं थी. एल-पासो उसे समुद्र की ओर ले गया. इसके जल के पार मोलुकास था. उसे पश्चिमी मार्ग मिल गया था!

वो वापस कॉन्सेपसियन और सैन एंटोनियो के साथ समाचार साझा करने के लिए रवाना हुए. लेकिन केवल कॉन्सेपसियन ही वहां था. सैन एंटोनियो पर एक विद्रोह हुआ था, और वो वापस स्पेन जा रहा था. उस खबर से फर्डिनेंड को बड़ा धक्का लगा. सैन एंटोनियो उसका सबसे बड़ा जहाज था. इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसमें सबसे अधिक रसद भरी की. सैन एंटोनियो के चले जाने से, उनके पास पर्याप्त भोजन नहीं बचेगा.

लेकिन फर्डिनेंड ने हार नहीं मानी. वो और उसके दल ने शिकार किया और मछली पकड़ी, और भोजन का स्टॉक किया. फिर वे समुद्र के लिए एक ऐसे स्थान के पास से गुज़रे जो प्रकाश से प्रज्वलित था. ऐसा लगा मानो हजारों आग जल रही हों. उन्होंने इस जगह का नाम "टिएरा डेल फुएगो" यानी "आग की भूमि." रखा. आज, हम जानते हैं कि वो "आग" ज्वालामुखियों से आती है.

28 नवंबर को, जहाज उबड़-खाबड़ पानी में से गुज़र रहे थे. फिर अचानक वे एक अंतहीन नीले सागर में थे. यह वही समुद्र होगा जिसकी सात वर्ष पूर्व बाल्बोआ ने चर्चा की थी. . . जिसे उसने दक्षिण-सागर कहा! वो सागर बहुत कोमल था; उसकी सतह पर कोई लहर नहीं दिख रही थी.

जहाजों को एल-पासो में प्रवेश किए अड़तीस दिन बीत चुके थे. अब, 330 मील बाद, तीन जहाजों ने इसे पार कर लिया था. निश्चित रूप से, फर्डिनेंड ने सोचा, उनका अभियान मोलुकास से तीन या चार दिनों से अधिक दूर पर नहीं था.

प्रशांत महासागर

उसे नहीं पता था कि यह सागर कितना बड़ा था. उसके लोग प्रार्थना करने के लिए डेक पर खड़े हो गए. फर्डिनेंड ने पानी को देखा और चिल्लाया, "समुद्र हमेशा की तरह शांत और परोपकारी हो सकता है. इस आशा में मैं उसे "एल मार पैसिफिको" नाम देता हूं"

प्रशांत महासागर! अगर फर्डिनेंड को पता होता कि आगे क्या होने वाला है, तो वो उसे एक अलग ही नाम देता. वो पृथ्वी पर सबसे बड़े महासागर को पार करने वाला था, जो दुनिया के लगभग एक तिहाई हिस्से में फैला हुआ था, जिसका पानी खतरों से भरा था.

अध्याय 8

पार करना

पूरे दिसंबर भर, फर्डिनेंड ने मोलुकास को खोजने की उम्मीद की. वो उत्तर गया, फिर पश्चिम. पर पानी के सिवा वहां कुछ नहीं था. कोई जमीन नहीं, कोई पक्षी नहीं, केवल शार्क. रात का आसमान भी अजीब लग रहा था. फर्डिनेंड ने वहां के सितारों को नहीं पहचाना.

छह सप्ताह बीत गए. समुद्र अभी भी शांत था, लेकिन जहाज पर परेशानी थी. बहुत कम काम करने करने के कारण, चालक दल ऊब गया था और लोग गुस्से में थे. झगड़े हो रहे थे. इससे भी बुरी बात यह थी कि खाने की सप्लाई खत्म हो रही थी.

फर्डिनेंड उदास हो गया. 20 जनवरी, 1521 को, वो गुस्से से पागल हो गया. उसने अपने चार्ट को उठाया और उसे पानी में फेंक दिया.

वे किस काम के थे? वो मोलुकास को नहीं खोज सका था. वो इस कभी न खत्म होने वाले समुद्र में फंस गया था.

जल्द ही, पीने का बचा हुआ सारा पानी पीला हो गया. उसमें से बहुत बदबू आ रही थी. पानी पीते समय लोग अपनी नाक को दबाकर रखते थे. लोगों को एक दिन में केवल एक घूंट पानी ही मिलता था.

उनका ठोस भोजन भी खराब हो रहा था. बिस्किट चूरा होकर कीड़ों से भरे पाउडर में बदल गए थे. मांस इतना सड़ा गया था कि वो अंधेरे में चमक रहा था. साथ में उसमें से लंबे सफेद कीड़े रेंग रहे थे. लोगों ने मज़बूरी में वो खाना भी खाया, और जब वो खत्म हो गया, तो उन्होंने लकड़ी के चिप्स, चूरा, और अंगारों पर भुना हुआ चमड़ा चबाया. फिर उन्होंने चूहों को खाया.

इस समय तक, चालक दल का हर सदस्य बीमार था. ताजे फल या सब्जियां नहीं होने से उन्हें स्कर्वी हो गई थी. स्कर्वी विटामिन "सी" की कमी के कारण होने वाली बीमारी थी. उनके मसूड़ों से खून बहने लगा था. वे नीला हो गए और फूलने लगे थे. जब लोगों ने कुछ भी चबाने की कोशिश की तो उनके दांत गिर गए. उनकी आंखों पर काले घेरे छाए थे. घावों ने उनके पतले शरीर को ढक लिया.

उनकी नाक बहने लगी. उनकी कोहनी, घुटने और टखने सूज गए. एक तिहाई चालक दल इतना कमजोर था कि वे लोग चल तक नहीं सकते थे. एक के बाद एक, करके वे मरने लगे और उन्हें समुद्र में दफना दिया गया.

लेकिन फर्डिनेंड बीमार नहीं लग रहा था. कुछ इतिहासकार सोचते हैं कि उनके पास विटामिन "सी" से भरपूर फ्रूट जैम की गुप्त आपूर्ति थी. अगर उनके पास वो था, तो उन्होंने इसे अपने साथियों के साथ साझा क्यों नहीं किया?

क्या यह सिर्फ स्वार्थ था? शायद. शायद नहीं. कप्तान-जनरल के रूप में, उसे अभियान का नेतृत्व करने की ज़रुरत थी. और ऐसा करने के लिए उसे स्वस्थ रहना ज़रूरी था. फर्डिनेंड यह भी जानता था कि अगर अधिक देर तक उसे भोजन नहीं मिला तो वो भी मर जाएगा.

फिर एक चमत्कार हुआ. 25 जनवरी को उन्हें एक छोटा सा टापू नजर आया.

वहाँ कोई पेड़ या ताजा पानी नहीं था, लेकिन मछली, केकड़े और पक्षी थे. भोजन की बहुतायत! जब बारिश हुई, तो लोगों ने ताजे पीने के पानी के लिए बारिश के पानी को बैरल में इकठ्ठा किया.

एक बार फिर, जहाज समुद्र में तैरने लगे. उन्हें उम्मीद थी कि मोलुकास करीब ही होगा. लेकिन फिर और छह सप्ताह बीत गए. फिर से, उनका भोजन ख़त्म होने लगा. भूमध्य रेखा के पास होने के कारण, सूरज ने डेक को झुलसा दिया. अब तक उनतीस लोगों की मौत हो चुकी थी, और बचे हुए लोगों में से अधिकांश मुश्किल से हिल सकते थे.

मार्च की शुरुआत में, फर्डिनेंड और उसके आदमियों ने बिस्किट के टुकड़ों का आखिरी बचा हिस्सा भी खा लिया. उन्होंने पानी की आखिरी चुस्की पी.

अगर वे जल्द ही जमीन पर नहीं पहुंचे, तो हर कोई भूखा मर जाएगा. अट्ठानबे दिनों में, वे नौ हजार मील की दूरी तय कर चुके थे, और वे पहले से कहीं अधिक खो गए थे.

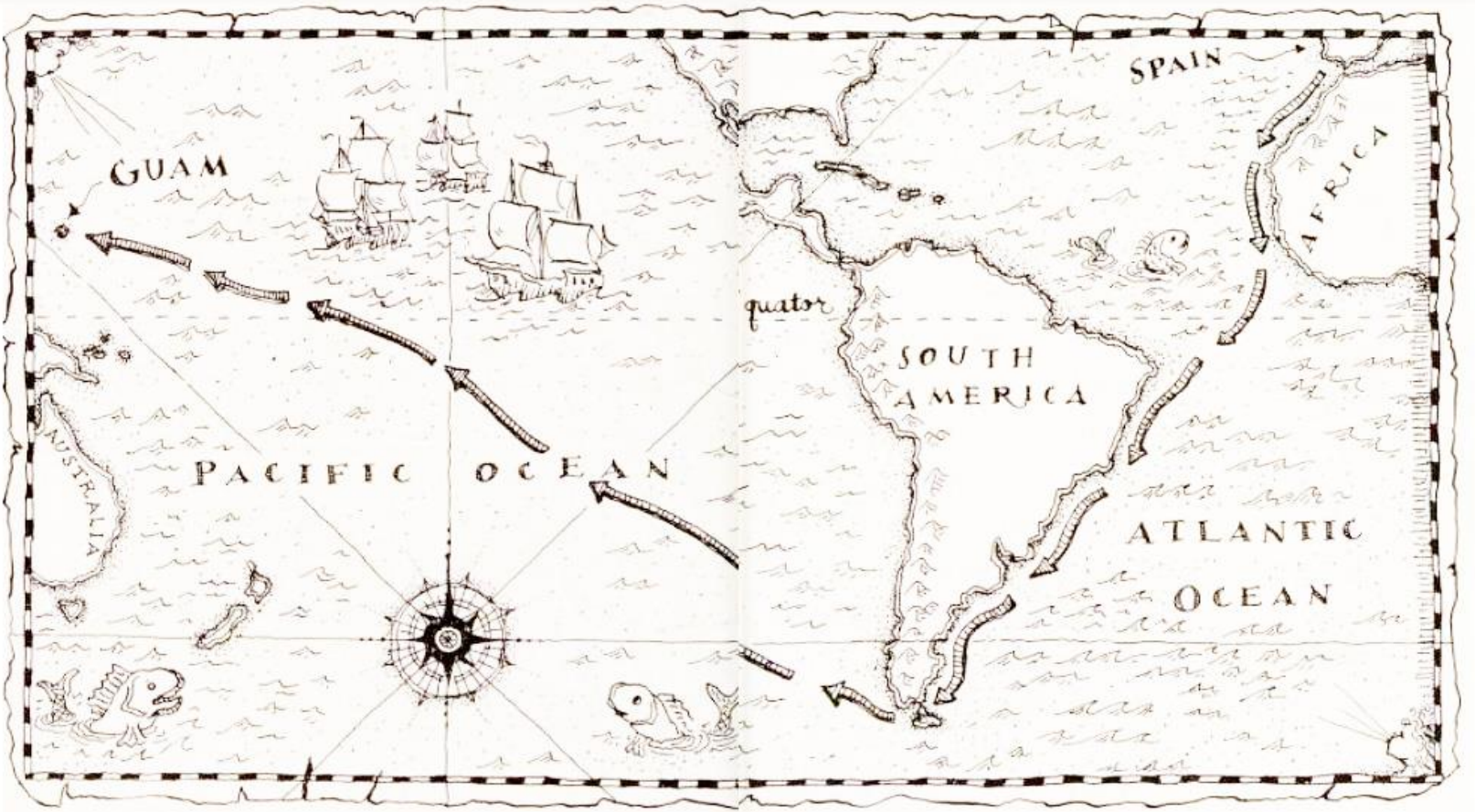

केवल एक आदमी में अभी भी इतनी ताकत बची थी कि वो लुकआउट पोस्ट पर चढ़ सके. जब वो वहां पहुंचा तो उन्होंने जो देखा, उस पर उसे विश्वास नहीं हुआ. धुंध से हरे भरे पहाड़ों और झरनों के साथ तीन द्वीप उसके सामने थे. "भगवान की प्रार्थना करो, भूमि! भूमि! भूमि!" वो चिल्लाया. यह वो देश था जिसे अब हम गुआम कहते हैं. वे लोग घसीटते हुए रेलिंग पर आ गए—प्रार्थना करते, रोते, और एक दूसरे को गले लगाते.

अध्याय 9

अंतिम जंग

जहाजों पर वे और आगे, पश्चिम की ओर बढ़े. फिर वे उन द्वीपों के एक समूह तक पहुँचे जो आज फिलीपींस का हिस्सा हैं. तब तक अभियान दल अपने घर स्पेन से सत्रह हजार मील दूर था.

फर्डिनेंड ने स्पेन के लिए नए द्वीपों का दावा किया. एक द्वीप सोने से इतना समृद्ध था कि वहां का हर मूल-निवासी सोने का कंगन पहनता था. मुखिया के पास ठोस सोने के हैंडल वाला एक खंजर था. और उसके पास सोने से ढका एक दांत भी था.

यहाँ अपनी तकदीर को चमकाने का एक मौका था! जब कप्तान-जनरल ने प्रमुख को स्पेन के साथ व्यापार करने के लिए मना लिया, तब उसके लोगों ने सोने, मोती और भोजन के बदले में मूल निवासियों को दर्पण, घंटियाँ और चमकीले रंग के कपड़े दिए.

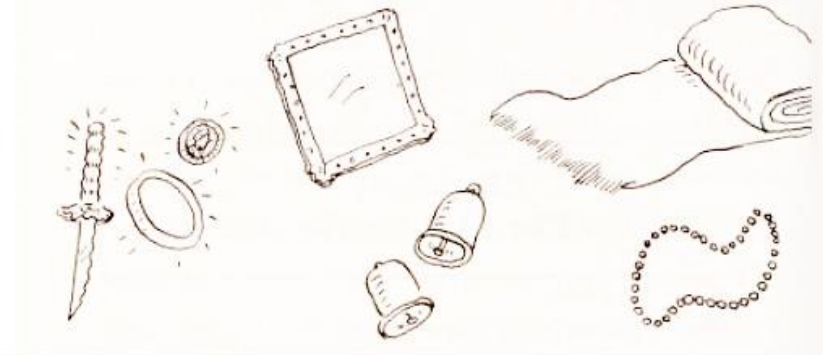

फर्डिनेंड अपने हिस्से की दौलत भी चाहता था. लेकिन इतनी लंबी, खतरनाक यात्रा के बाद वो कुछ और करने का कायल हो गया था. वो चीज़ उसे सोने या मसालों से ज्यादा महत्वपूर्ण लगती थी. उनका मानना था कि ईश्वर और ईसाई धर्म को, मूल-निवासियों तक पहुंचाना उनका कर्तव्य था. वो आत्माओं को बचाने और यीशु के बारे में प्रचार करने के लिए प्रेरित हुआ. अकेले एक द्वीप पर, उसने बाईस-सौ लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित दिया. फिर भी, फर्डिनेंड उससे संतुष्ट नहीं हुआ. वो चाहता था कि हर कोई यह पहचाने कि उसका भगवान सर्वोच्च था.

एक द्वीप के एक प्रमुख ने फर्डिनेंड के धर्म को स्वीकार करने से इनकार कर दिया. न ही उसने स्पेन के राजा के अधिकार को स्वीकार किया. फर्डिनेंड ने अपने धर्म और अपने राजा के लिए युद्ध में जाने की कसम खाई. उसे यकीन था कि अगर उसने ऐसा किया तो भगवान उसकी रक्षा करेगा.

क्या फर्डिनेंड पागल हो रहा था? उसके अधिकारियों ने उससे लड़ाई न लड़ने की भीख मांगी. परन्तु उसने, उनसे कहा, "मैं आप में से सिर्फ स्वयंसेवकों को लूंगा. तब हम देखेंगे कि परमेश्वर पर किसका भरोसा है."

27 अप्रैल की आधी रात को, फर्डिनेंड और साठ आदमी, तीन नावों में सवार हुए. वे कवच पहनकर मुखिया के द्वीप की ओर जाने लगे. जैसे ही वे जा रहे थे, उन्होंने एक कौवे की कांव-कांव की आवाज सुनाई दी. वो एक अपशकुन था.

वे सारी रात नावों में रहे, और उन्होंने सूर्योदय की प्रतीक्षा की. लेकिन पहली रोशनी में उन्होंने एक भयानक नजारा दिखाई दिया.

वहाँ समुद्र तट पर पंद्रह सौ मूल निवासियों की एक सेना खड़ी थी, जो लड़ने के लिए तैयार थी.

हमेशा की तरह, फर्डिनेंड की एक योजना बनाई. ग्यारह आदमी नावों के साथ रुके. वो और उनतालीस अन्य लोग कमर तक गहरे पानी में कूद गए. उनके भारी कवच ने उनके लिए किनारे तक चलना मुश्किल बना दिया. जब तक वे समुद्र तट पर पहुँचे, वे थक चुके थे.

ज़हरीले बाणों की बौछार, भालों और पत्थरों ने उनका अभिवादन किया. हथियार उनके कवच से हानिरहित रूप से उछले. लेकिन फर्डिनेंड के आदमी वैसे भी घबरा गए. वहां पर सैकड़ों की संख्या में देशी सैनिक मौजूद थे, जो जमकर लड़ रहे थे. जब एक जहरीला तीर फर्डिनेंड के पैर में लगा, तो उसे पीछे हटने का आदेश देने के लिए मजबूर होना पड़ा.

पानी में हाथ-पांव मारते हुए, उसके सैनिकों ने नावों पर जाने की कोशिश की. जल्दबाजी में, उन्होंने एक नाव को उलट दिया, और दूसरी पर चढ़ने के लिए वे आपस में लड़ पड़े.

अपने घाव से छटपटाते हुए, फर्डिनेंड किनारे पर डटे रहे और उन्होंने बाकी लोगों को कवर दिया.

आठ वफादार आदमियों के साथ, उसने एक घंटे तक देशी सेना को रोके रखा.

यह उनकी आखिरी लड़ाई थी. देशी सैनिक आते रहे. उन्होंने फर्डिनेंड का हेलमेट पत्थरों से तोड़ डाला.

तभी कहीं से कोई एक भाला लेकर आया और उसने फर्डिनेंड के चेहरे पर वार किया. दूसरे ने उसके दाहिने हाथ को इतनी बुरी तरह से काट दिया कि वो अब अपनी तलवार तक नहीं खींच सकता था. जब उनके बाएं पैर में भाला लगा, तो वो फिर पानी में नीचे गिर पड़े. इतने सारे मूल-निवासी उन पर एक-साथ गिरे कि वो दृष्टि से ओझल हो गए. उनके एक आदमी ने बाद में लिखा, "और इस तरह उन्होंने हमारे दर्पण, हमारे प्रकाश, हमारे सुख-चैन, और हमारे सच्चे और एकमात्र मार्गदर्शक को मार डाला."

फर्डिनेंड मैगलन का शरीर कभी नहीं मिला.

अध्याय 10

यात्रा का अंत

8 नवंबर, 1521 को, स्पेन छोड़ने के दो साल से अधिक समय बाद, त्रिनिदाद और विक्टोरिया अंततः मोलुकस पहुंचे. तीन महीने बाद, विक्टोरिया मसालों से लदकर स्पेन के लिए रवाना हुई.

जब जहाज़ 6 सितंबर, 1522 को सत्ताईस हजार मील की यात्रा के बाद स्पेन पहुंचा तो उसकी लकड़ी पूरी तरह सड़ गई थी और लीक कर रही थी. उसके चालक दल के सिर्फ अठारह लोग ही जीवित बचे थे. स्पेन में किसी को भी, उनके लौटने की उम्मीद नहीं थी.

बहुत पहले, फर्डिनेंड के अभियान पर गए सभी लोगों को मृत घोषित कर दिया गया था. फिर भी कुछ बचे लोगों ने वो पूरा अभियान पूरा किया जो फर्डिनेंड मैगलन करने निकला था. उन्होंने पूरी दुनिया का चक्कर लगाया था.

लौटने वाले नाविकों को हीरो जैसी बधाई दी गई. राजा चार्ल्स ने उन्हें अपने महल में आमंत्रित किया. लेकिन वो जो मसाले वे लाए थे, उससे सिर्फ यात्रा का खर्चा ही निकल पाया.

धन की आशा, जिसने फर्डिनेंड मैगलन को समुद्री अभियान पर भेजा था, वो उसे उस यात्रा में नहीं मिली.

त्रिनिदाद ने अप्रैल, 1522 में मोलुकास छोड़ दिया. लेकिन, समुद्र में तीन महीने के बाद, स्कर्वी से मरने वाले चालक दल के साथ, जहाज द्वीपों पर वापिस लौट गया. 1525 में ही त्रिनिदाद - केवल चार बचे लोगों के साथ - अंत में स्पेन पहुंचा.

और कप्तान-जनरल, फर्डिनेंड मैगलन? उनको लोगों ने भुला दिया. उनकी पत्नी और बच्चे की पहले ही मौत हो गई थी. यात्रा के बीच में ही फर्डिनेंड की भी मृत्यु हो गई थी. जब कभी फर्डिनेंड का जिक्र हुआ तो उसके अधिकांश आदमियों ने उसके बारे में खराब बातें ही कहीं.

अभियान को असफल माना गया. उस लंबे, कठिन अभियान से व्यापारियों ने कोई पैसा नहीं कमाया. अन्य कप्तान जो मैगलन जैसे ही समुद्री मार्ग पर निकले थे उन्हें फर्डिनेंड का जलडमरूमध्य भी नहीं मिला. स्पेन के राजा चार्ल्स ने अंततः मोलुकास के अधिकारों को, पुर्तगाल को बेच दिया. ऐसा लगा जैसे उस लंबी यात्रा ने बहुत कम हासिल किया हो.

बेशक, इसने बहुत कुछ हासिल किया था. पर अब, लोगों को यह पता चला कि वो जो सोचते थे, दुनिया उससे कहीं ज्यादा बड़ी थी.

पहली बार इस बात के प्रमाण मिले कि प्रशांत और अटलांटिक महासागर आपस में जुड़े हुए थे. और इस बात का पूर्ण प्रमाण मिला कि पृथ्वी गोल थी और पानी से इस तरह ढंकी हुई थी कि जहाज द्वारा उसका चक्कर लगाना संभव था.

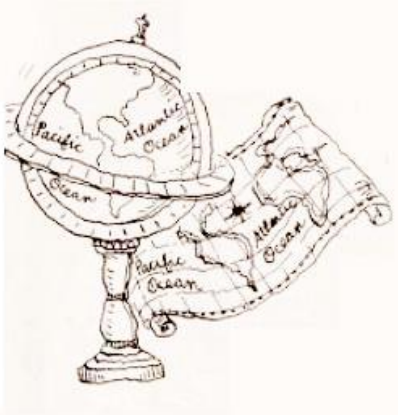

जैसे-जैसे साल बीतते गए, लोगों को पता चला कि फर्डिनेंड मैगलन की यात्रा कितनी साहसी थी. इस भयंकर छोटे आदमी ने, दुनिया के बारे में लोग जो कुछ भी जानते थे उसे बदल दिया था. फिर पूरे प्रशांत महासागर में यात्राओं के साथ, अन्वेषण का एक नया युग शुरू हुआ. नक्शे फिर से बनाए गए और ग्लोब उपयोग में आए. यूरोप, एशिया और प्रशांत की महान सभ्यतायें एक-दूसरे के करीब आईं. फर्डिनेंड ने यह सब शुरू किया था. आज, फर्डिनेंड मैगलन एक महान योद्धा, एक शानदार नाविक और एक साहसिक खोजकर्ता होने के लिए प्रसिद्ध है. वो एक हत्यारा और एक असहिष्णु व्यक्ति भी था. वो मानता था उसकी धार्मिक मान्यताएं हर किसी की आस्था बननी चाहिए. लेकिन उसकी हरकतें उस काल के लिए सामान्य थीं. फर्डिनेंड मैगलन, एक अजनबी समुद्र तट पर, बिना किसी उद्देश्य के मरने के लिए हजारों मील की दूरी पर चला गया था.

हालांकि उसने अपनी यात्रा पूरी नहीं की, उसे दुनिया भर में जहाज़ द्वारा पूरी दुनिया का चक्कर लगाना वाले पहले व्यक्ति के रूप में पहचाना जाता है.

मैगलन की समय-रेखा

1480 में शायद फर्डिनेंड पैदा हुआ

1492 फर्डिनेंड को रानी लियोनोरा का लड़का-नौकर नियुक्त किया गया

1496 फर्डिनेंड एक सरकारी क्लर्क बना और उसने समुद्री अभियानों को स्थापित करने में मदद की

1505 फर्डिनेंड अरबों के खिलाफ युद्ध में लड़ा

1509 फर्डिनेंड पहली बार घायल हुआ

1510 फर्डिनेंड पुर्तगाल लौटने की कोशिश की, लेकिन उसका जहाज बर्बाद हो गया

1512 फर्डिनेंड पहली बार फिलीपींस गया

1515 फर्डिनेंड दूसरी बार घायल हुआ, और अब वो स्थायी रूप से लंगड़ा था

1516 पुर्तगाली राजा ने फर्डिनेंड को अभियान पर भेजने से इंकार कर दिया

1517 फर्डिनेंड हमेशा के लिए पुर्तगाल छोड़कर स्पेन चला गया

1518 स्पेन के राजा ने फर्डिनेंड की पश्चिम में मोलुकास की यात्रा के लिए वित्त देने के लिए सहमति व्यक्त की

1519 फर्डिनेंड और उसके आदमी मोलुकास के लिए पश्चिमी मार्ग खोजने के लिए निकले

1520 फर्डिनेंड ने एक विद्रोह को विफल कर दिया, अंटार्कटिका के पास सर्दी बिताई, और पेटागोनिया नाम दिया

1520 फर्डिनेंड ने एल-पासो की खोज की और प्रशांत महासागर का नाम रखा

1521 फर्डिनेंड ने स्पेन के लिए फिलीपींस का दावा किया, और युद्ध में मारा गया

1522 फर्डिनेंड का जहाज, विक्टोरिया स्पेन पहुंचा और दुनिया की परिक्रमा लगाने वाला पहला जहाज़ बना

विश्व की समयरेखा

1488 पुर्तगाल के बार्टोलोमू डायस अफ्रीका के दक्षिणी सिरे केप ऑफ गुड होप का चक्कर लगाने वाले पहले यूरोपीय बने
1492 कोलंबस नई दुनिया की खोज करने वाला पहला यूरोपीय बना
1494 टोरडेसिलस की संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिसने दुनिया को स्पेन और पुर्तगाल के बीच विभाजित किया
1498 पुर्तगाल के वास्को डी गामा ने भारत के लिए एक समुद्री मार्ग खोजा
1498 इंग्लैंड के जॉन कैबोट ने उत्तरी अमेरिका के तट की खोज की
1500 पुर्तगाल ने ब्राजील का दावा किया
1501 पुर्तगाल के अमेरिगो वेस्पुची ने खोज की जो अब दक्षिण अमेरिका है
1507 नई दुनिया का नाम "अमेरिका" दिया गया
1513 बाल्बोआ, प्रशांत महासागर को देखने वाला पहला यूरोपीय बना जिसे उसने दक्षिण-सागर कहा
1513 स्पेन के जुआन पोंस डी लियोन ने फ्लोरिडा की खोज की
1520 पुर्तगाली व्यापारी चीन पहुंचे
1521 फर्डिनेंड मैगलन प्रशांत महासागर की यात्रा करने वाला पहला व्यक्ति बना
1521 स्पेन के हर्नांडो कोर्टेस ने, मेक्सिको के एज़्टेक पर विजय प्राप्त की
1522 मैगलन के आदमियों ने दुनिया की पहली परिक्रमा पूरी की
1531 स्पेन के फ्रांसिस्को पिजारो ने, पेरू पर विजय प्राप्त की
1541 फ्रांस के जैक्स कार्टियर, क्यूबैक, कनाडा पहुंचा
1542 स्पेन के हेर्नान्दो डे सोटो ने मिसिसिपी नदी की यात्रा की
1542 पुर्तगाली, जापान पहुंचे वाले पहले युरोपियन बने
1580 इंग्लैंड के सर फ्रांसिस ड्रेक ने दुनिया की दूसरी परिक्रमा लगाई